केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

दिसंबर 2024 अंक, वर्ष २५ नं ७७ - डी.1, लक्ष्मीनगर,
पद्मश्री डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर रोड, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम - 695 004

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के 43वें वार्षिक समारोह का उद्घाटन करते हुए
श्री. वी. मुरलीधरन (माननीय पूर्व विदेश एवं संसदीय कार्य राज्यमंत्री)।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गवेषणा पुरस्कार-2023 डॉ. के. दिलना को प्रदान करते हुए डॉ. वी.पी.जॉय आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त) (पूर्व मुख्य सचिव, केरल सरकार, चेयरपेर्सन, केरल पब्लिक एन्टरप्रैसस सेलक्शन & रिक्रूटमेंट बोर्ड)।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी संरक्षक न्यायमूर्ति श्री. एम.आर. हरिहरन नायर
11 जूलाई 2024 को विश्व शांति आंदोलन ट्रस्ट का शांति राजदूत पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

पद्मश्री से विभूषित श्रीमति अश्वति तिरुनाल लक्ष्मीभाई तंपुराट्टी जी का अभिनंदन कर रहे हैं अकादमी के

संरक्षक न्यायमूर्ति श्री. एम.आर. हरिहरन नायर   अध्यक्षा प्रोफ. (डॉ.) एस. तंकमणि अम्मा   महासचिव डॉ. एस. सुनन्दा

43वाँ वार्षिक सम्मेलन और डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गवेषणा पुरस्कार (2023) समर्पण समारोह का कार्यक्रम

डॉ. रंजिता राणी के.वी.

डॉ. एस.सुनन्दा

श्री. मुलीधरन जी को शॉल ओढ़ाकर स्वागत करते हुए

डॉ. वी.पी.जॉय जी को शॉल ओढ़ाकर स्वागत करते हुए

प्रोफ. (डॉ.) एस. तंकमणि अम्मा

न्यायमूर्ति श्री. एम.आर. हरिहरन नायर

प्रो. (डॉ). के. श्रीलता

डॉ. विष्णु आर.एस.

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

दिसंबर २०२४ अंक, वर्ष २५ नं ७७ - डी.१, लक्ष्मीनगर,
पद्मश्री डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर रोड, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४
keralahindisahityaacademy.com www.drnchandrasekharannair.in

स्थापक सम्पादक
पद्मश्री डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर

सम्पादक
प्रो. (डॉ.) एस. तंकमणि अम्मा

सम्पादक मंडल
डॉ. पी.जे. शिवकुमार
डॉ. एम.एस. विनयचन्द्रन
डा. एस. लीलाकुमारी अम्मा
डा. एस. सुनन्दा
डॉ. रंजिता राणी के.वी.

संरक्षक
जस्टिस एम.आर.हरिहरन नायर

सम्पादकीय कार्यालय
केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, श्रीनिकेतन, डी-1, लक्ष्मीनगर, पद्मश्री डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर रोड, पट्टम पालस पोस्ट, तिरुवनन्तपुरम - 695 004

प्रकाशकीय कार्यालय
मुद्रित द्वारा
डॉ.एस. सुनन्दा, महासचिव,
केरल हिन्दी साहित्य अकादमी
श्रीनिकेतन, डी-1, लक्ष्मीनगर,
तिरुवनन्तपुरम - 695 004
मोबाईल - 8800095639
मूल्य-एक प्रति: 20.00 रुपये
आजीवन सदस्यता: 1000.00 रुपये
संरक्षक : 2000.00

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्टूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतक्ल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरखडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लखनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाखपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडु:- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्वीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरात**:- अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटक**:- बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोगा, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्रा**:- **मुम्बई**, कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंङगाबाद-३, औरंङगाबाद-२, औरंङगाबाद-१, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलहापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगाल**:- कलक्कत्ता। **हैदराबाद**:- सुल्तान बाज़ार। **गौहाटी**:- कानपुरा। **नई दिल्ली**:- आर, के पुरम। गोवा:- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

इस अंक में

लेखन | पृष्ठ सं.

	लेखन	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय *प्रो. (डॉ.) तंकमणि अम्मा*	3
2.	केरल हिंदी साहित्य अकादमी की जैत्र यात्रा ज़ारी है !!	4
3.	पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर	7
4.	विचारों के विशारद : डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की निबंध यात्रा *डॉ. अजित्रा.आर.एस.*	11
5.	डॉ. एन चंद्रशेखरन नायर का उपन्यास 'सीतम्मा'- एक अध्ययन *डॉ. बिंदु.सी.आर.*	15
6.	भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता के अनन्य पुजारी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर : निबन्धों के विशेष संदर्भ में *डॉ. धन्या एल.*	18
7.	मानवता के पक्षधर कवि डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का चिरजीव महाकाव्य *डॉ. एलिसबत जोर्ज*	22
8.	नाटककार डॉ. एन चंद्रशेखरन नायर *डॉ. कमलानाथ एन.एम.*	24
9.	डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का आलोचना साहित्य *डॉ. एस.लीलाकुमारी अम्मा*	27
10.	डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर : व्यक्तित्व और कृतित्व *डॉ. लक्ष्मी एस.एस.*	31
11.	डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर के काव्य में गाँधी दर्शन *प्रो. (डॉ.) पंडित बन्ने, डी. लिट्.*	36
12.	कहानीकार डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर *डॉ. राखी एस.आर.*	39
13.	डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर की फुटकर कविताओं में गहन भावनात्मक अनुभव *डॉ. विजयलक्ष्मी. एल.*	43
14.	केरल हिन्दी साहित्य अकादमी वार्षिक समारोह 28-12-2023 *डॉ. के.वी. रंजिता राणी*	46

सम्पादकीय

केरळ हिन्दी साहित्य अकादमी के बहुविध अकादमिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के विवरण, तत्संबन्धी चित्र, विविध स्तरीय शोध आलेख आदि को समेटकर "केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका" का नवीनतम अंक पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। इस अंक का लोकार्पण 28 दिसंबर 2024 को आयोजित किये जानेवाले अकादमी के 44 वें वार्षिक समारोह में संपन्न होगा। अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष तथा शोधपत्रिका के पूर्व संपादक परम आदरणीय डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर जी, जो निष्ठावान हिन्दी प्रचारक, अध्यापक, लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार, शोधकर्ता, शोधनिर्देशक, पत्रकार, चित्रकार आदि रूपों में सुविख्यात रहे हैं, पद्मश्री से विभूषित उनके बहुआयामी व्यक्तित्व और कृतित्व को आधार बनाकर अकादमी की ओर से नवंबर 2024 को जो राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई थी, उसमें प्रस्तुत किये गये शोध आलेख इस अंक में समाहित हैं। ये आलेख इन्द्रधनुषी प्रतिभावान साहित्यकार नायर जी के कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार, निबन्धकार, अनुसंधाता आदि रूपों को उजागर करने में तथा उनकी रचनाओं के सम्यक विवेचन-विश्लेषण व मूल्यांकन में सर्वथा सक्षम हैं। सभी शोधप्रबन्ध प्रस्तोताओं को इस अवसर पर अकादमी की ओर से साधुवाद एवं अभिनंदन।

राष्ट्र ने जिस महान व्यक्तित्व को पद्मश्री की मानद उपाधि देकर सम्मानित किया, उनका सम्मान तिरुवनंतपुरम नगर निगम ने भी शानदार ढंग से किया। डॉ. नायर जी के आवास के सामने से होकर लक्ष्मीनगर तक जानेवाली सड़क का नामकरण नगर निगम ने "पद्मश्री डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर रोड़" कर दिया। अकादमी के संरक्षक न्याययमूर्ति एम.आर. हरिहरन नायर जी, अकादमी की अध्यक्षा प्रो.एस. तंकमणि अम्मा, उपाध्यक्षा डॉ.पी. लता जी, अकादमी की महामंत्री एवं डॉ. नायर जी की सुपुत्री डॉ. एस.सुनन्दा जी, डॉ. नायर जी की सुपुत्री श्रीमती नीरजा राजेन्द्रन जी तथा अन्य कार्यकर्ताओं के विशेष अनुरोध पर सड़क के नामकरण केलिए आवश्यक कार्रवाई करनेवाले नगर निगम के पार्षद अधिवक्ता श्री. अंशु वामदेवन जी के प्रति तथा तिरुवनन्तपुरम नगर निगम के प्रति अकादमी की कृतज्ञता अर्पित है।

अकादमी के 2024 के "डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गवेषण पुरस्कार" केलिए डॉ. जे.अजिताकुमारी का चयन हुआ है। 50,000 की राशि, प्रशस्तिपत्र एवं प्रमाणपत्र युक्त इस पुरस्कार प्राप्ति पर डॉ. जे. अजिताकुमारी का हार्दिक अभिनंदन। यह पुरस्कार 28 दिसंबर 2024 को संपन्न होनेवाले अकादमी के वार्षिक समारोह में प्रदान किया जाएगा।

अकादमी के पिछले वार्षिक सम्मेलन का प्रतिवेदन तथा अकादमी की विविध गतिविधियों के चित्र भी इस अंक में समाविष्ट हैं।

आशा है, अकादमी के सर्वस्व रहे हिन्दी मलयालम के मूर्धन्य साहित्यकार डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर जी के व्यक्तित्व और बहुरंगीन कृतित्व तथा अकादमी की बहुआयामी गतिविधियों की झलक पाठक इस अंक में पा सकेंगे।

पाठकों की मूल्यवान प्रतिक्रियाओं का स्वागत रहेगा।

प्रो.(डॉ.) एस. तंकमणि अम्मा

अध्यक्ष, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम

केरल हिंदी साहित्य अकादमी की जैत्र यात्रा ज़ारी है !!

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी समूचे दक्षिण भारत में ही इस प्रकार की एकमात्र पंजीकृत संस्था है। देशीय एवं भावात्मक एकता को लक्ष्य में रखकर डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर जी ने एक संस्था की संकल्पना की और अपने नेतृत्व में इसकी स्थापना की । इसकी नियमावली में उपर्युक्त लक्ष्य के अनुकूल अनेक प्रकार के कार्यकलापों की ओर इंगित किया गया है, जैसे भाषाई एवं सांस्कृतिक एकता को रख सकने योग्य पुस्तकों का रचना निर्माण एवं प्रकाशन करना, हिन्दीतर प्रदेशों में रचे हिन्दी ग्रंथों की प्रदर्शिनियों का आयोजन करना, दक्षिणभाषाओं में रचे गये श्रेष्ठ एवं उत्तम ग्रंथों का शोधात्मक अध्ययन कराने का प्रबंध करना, भाषाई एवं सांस्कृतिक सम्मेलनों और सेमिनारों का आयोजन करना, तुलनात्मक अध्ययन में लगे हुए अकादमी के सदस्यों को प्रोत्साहन देना, दक्षिण के हिन्दी साहित्यकारों को उनकी योग्यता के अनुसार प्रोत्साहन एवं अवार्ड देना और उनका आदर-सम्मान करना, दक्षिण के ऐसे हिन्दी साहित्यकारों को श्रेष्ठ साहित्यिक उपाधियाँ प्रदान करना; अकादमी की तरफ से मुद्रणालय की व्यवस्था करना, बहुभाषा या द्विभाषा पत्रिकाओं का प्रकाशन करना, सांस्कृतिक अभियान में लगे हुए अकादमी के सदस्यों को प्रोत्साहन देना, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक यात्रा केलिए वित्तीय सहायता देना, सहकारिता के आधार पर दक्षिण की भाषाओं के बीच में सांस्कृतिक अध्ययन करने देना, भारतीय भाषाओं में रचे श्रेष्ठ ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद करना और उनका प्रकाशन करना, उदीयमान युवा लेखकों की रचनाओं को प्रोत्साहन देना और उनकी रचनाओं को सहकारिता के बल पर प्रकाशित करना इत्यादि ।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी का पंजीकरण 15 जून 1982 में हुआ था। इसके दो साल पहले से केरल हिंदी साहित्य परिषद् के नाम से जो संस्था कार्य-निरत थी और अनेक प्रकार के कार्यकलाप चलाती जा रही थी। वह 1982 में केरल हिंदी साहित्य अकादमी के नाम से पंज़ीकृत हुई है। परिषद् का औपचारिक उद्‌घाटन केरल के मुख्य मंत्री श्री.ई.के.नायनार द्वारा हुआ था। परिषद् ने कई बार हिंदी और मलयालम की साहित्यिक गति-विधि पर लगभग शताधिक चर्चाएँ की हैं, जिनमें केरल केऔर हिंदी के अनेक मूर्द्धन्य साहित्यकारों ने भाग लिया था। अनेक साहित्यिक सेमिनार भी चलाये। परिषद् के सदस्यों के रचे गए ग्रंथों का धूमधाम से विमोचन हुआ था। केरल के महाकवि श्री.एम.पी.अप्पन की मलयालम कविताओं का हिंदी में अनुवाद करके 'गौरीशंकर' नाम से प्रकाशित किया। प्रस्तुत ग्रंथ का अनुवाद परिषद् के अध्यक्ष डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी ने किया और उसका विमोचन नयी दिल्ली में केन्द्र परिवहन मंत्री श्री.वीरेन्द्र पाटीलजी द्वारा हुआ। केरल के प्रख्यात उपन्यासकार श्री.एम.टी.वासुदेवन नायर का मलयालम उपन्यास 'मञ्ञु' का हिंदी में अनुवाद अकादमी की सदस्या श्रीमती हफसत सिद्दीकी ने किया। उसका धूमधाम से विमोचन नयी दिल्ली में श्रीरामचन्द्र भरद्वाज द्वारा आयोजित संसद सदस्यों के साहित्यकारों की सभा में केन्द्रमंत्री श्री.सीताराम केसरी जी ने किया।

श्री. उत्राटम तिरुनाल मार्ताण्डवर्मा तंपुरान
केरल हिंदी साहित्य अकादमी भवन का उद्घाटन करते हुए

केरल हिंदी साहित्य अकादमी श्रीमती अश्वति तिरुनाल गौरी लक्ष्मीभाई तंपुराट्टी का आदर करते हुए डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

केरल हिंदी साहित्य अकादमी का औपचारिक उद्घाटन केरल के मुख्यमंत्री श्री.के.करुणाकरन जी ने किया और प्रथम वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन केन्द्रीय मंत्री श्री ज़ियाउर रहमान अनज़ारीजी ने उसी मंच पर किया।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी अपने निश्चित उद्देश्य और कार्यक्रमों पर बराबर प्रयत्नशील है। कई ग्रंथों का प्रकाशन किया, जिनमें 'समकालीन भारतीय नाट्य साहित्य'. 'हम सूरज के बेटे' (ञङ्ङल सूर्यन्टे मक्कल) 'सिंबोलिक कवि जी.शंकर कुरुप', 'केरल के हिंदी साहित्य का बृहद् इतिहास', 'दक्षिण के प्रतिनिधि हिंदी साहित्यकार डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर', 'सीतम्मा', नामक उपन्यास, 'कविताएँ देशभक्ति की', केरल की हिंदी कविताएँ, 'देवयानी' नामक नाट्य-रचना का संस्कृत में केरल के मूर्धन्य संस्कृत पंडित श्री.एम.एच.शास्त्री द्वारा अनुवाद एवं मुद्रण, श्री.शिवरामय्यर द्वारा महाकवि उल्लूर और वल्लत्तोल के काव्यों का अनुवाद और 'त्रिवेणी' नाम से प्रकाशन आदि ख्याति प्राप्त ग्रंथ हैं। केन्द्र सरकार ने इन ग्रंथों का थोक परचेस किया।

प्रतिवर्ष दक्षिण के प्रसिद्ध साहित्यकारों को उनकी कृतियों के आधार पर अकादमी पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देती आ रही है।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका

अकादमी की मुख पत्रिका केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका सन् 1996 से अकादमी चेयरमैन ड़ॉ.चन्द्रशेखरन नायर के मुख्य संपादकत्व में सुचारू रूप में चली आ रही है। यह पत्रिका मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से निकल रही है। पिछले चौबीस वर्षों के भीतर अकादमी ने देश के दस से अधिक ग्रंथकारों की रचनाएँ प्रकाशित की हैं।

केरल के उच्च न्यायालय के भूतपूर्व जस्टिस एम.आर.श्री.हरिहरन नायर अकादमी के संरक्षक हैं। ख्यातिप्राप्त लेखिका एवं केरल विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग की भूतुपूर्व अध्यक्षा डॉ.एस.तंकमणि अम्मा अकादमी की अध्यक्षा हैं तथा डॉ.एस.सुनंदा अकादमी की महासचिव हैं।

पिछले 43 सालों से केरल हिन्दी साहित्य अकादमी ने हिन्दी केलिए जो सेवा अर्पित की वह बहुमूल्यवान रही है । अकादमी के प्रारम्भ से अब तक जितनी प्रगति एवं अभिवृद्धि हुई है, उसका एकदम वर्णन करना असंभव है। अकादमी को आज अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हो गयी है । स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर इसका विशेष आदर है । मुख्यतः शोध पत्रिका ने भारत की संस्कृति एवं जन- जीवन पर आधारित विषयों पर ध्यान दिया है। पूरे देश की साहित्यिक मनस्थिति शोध पत्रिका में शामिल है।

डॉ.पद्मश्री चन्द्रशेखरन नायर (दिवंगत) की क्रांतदर्शिता और संगठन-कुशलता ने अकादमी के कार्यकलापों को उच्च स्तर का बनाया है। हर साल वे नयी खोज को लेकर अवतरित होते हैं। सन् 2018 से एक नया कार्यक्रम उन्होंने शुरू किया है कि केरल के विश्वविद्यालयों से हिंदी में पीएच.डी उपाधि प्राप्त शोद सप्रबंधों से सर्वश्रेष्ठ शोध प्रबंध का चयनकर उसे पचास हज़ार (50000) रुपये का 'डॉ.चन्द्रशेखरन नायर हिंदी शोध पुरस्कार' देने का शुभारंभ हुआ है। सन् 2018 में सर्वप्रथम यह पुरस्कार एन.एस.एस. हिंदु कॉलेज, चंगनाश्शेरी के हिंदी विभाग की सह आचार्या डॉ.रेणु.एस और सन् 2019 में यह पुरस्कार अंकमाली महाकवि जी मेम्मोरियल एन.एस.एस. की अध्यापिका डॉ.रेमी को मिल गया। 2020, 2021 तथा 2022 के पुरस्कार डॉ.सुप्रिया.के.वी., डॉ.के.वी.रंजिता राणि तथा ड़ॉ.लक्ष्मी.एस.नायर को मिले हैं। 2023 का पुरस्कार डॉ. दिलना को मिला। नयी पीढ़ी के हिंदी शोधार्थियों को प्रोत्साहित कर हिंदी भाषा का सर्वागीण विकास करने की दिशा में यह एक शुरुआत है।

पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर गवेषण पुरस्कार 2018
डॉ. रेणु एस. को देते हुए

पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर गवेषण पुरस्कार 2019
डॉ. रेमी ए.एम. को देते हुए

10 जनवरी 2022 को डॉ.नायर के निधन बाद नई कार्यकारिणी समिति के नेतृत्व में अकादमी के कार्यकलाप चल रहे हैं। दिसंबर 2022 को डॉ.रंजीत आर.एस.रविशैलम के संपादकत्व में 'श्री चन्द्रशेखरन' शीर्षक से पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन जो हुआ, वह अकादमी की महत्वपूर्ण उपलब्धि है तथा संस्थापक अध्यक्ष के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि भी।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी की जैत्र यात्रा ज़ारी है ।

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर एक प्रख्यात हिंदी विद्वान और 42 वर्षों तक केरल हिंदी साहित्य अकादमी, तिरुवनंतपुरम, केरल के संस्थापक अध्यक्ष रहे थे। डॉ. नायर 10 जनवरी 2022 (विश्व हिंदी दिवस) को 99 वर्ष की आयु में ब्रह्मलीन हो गये।

डॉ एन .चन्द्रशेखरन नायर तिरुवनंतपुरम के महात्मा गांधी कॉलेज में हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष थे। डॉ नायर यू जी सी के मेजर रिसर्च फेलो रहे थे ।1976-2010 के दौरान, डॉ. नायर को केंद्र सरकार को विभिन्न मंत्रालयों की 14 हिंदी सलाहकार समितियों में 'सलाहकार' के रूप में नामित किया गया था। 1989-93 के दौरान डॉ. नायर को केरल के राज्यपाल द्वारा केरल विश्वविद्यालय में 'सेनेटर' के रूप में नामित किया गया था। उन्होंने हिंदी प्रचार के लिए कई अन्य अकादमिक समितियों के अलावा हिंदी पाठ्यपुस्तक समिति के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया और केरल के कई प्रांतों में एन.एस.एस. कॉलेजों के हिंदी विभाग के अध्यक्ष भी रहे थे।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल थे। ओट्टपालम, पालघाट में, उन्होंने गांधीवादी जीवन शैली और उनके सिद्धांतों को बढ़ावा देने के लिए गांधी विज्ञान भवन और भारत युवक समाज की स्थापना की। उन्हें गांधी शताब्दी समिति के अध्यक्ष के रूप में भी नामित किया गया था।

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर का जन्म शास्तांकोट्टा, कोल्लम, केरल में एक मध्य वर्गीय परिवार में हुआ था। अपनी पढ़ाई पूरी करके हाई स्कूलों में 4 साल पढ़ाने के बाद, डॉ. एन चन्द्रशेखरन नायर 1951 में महात्मा गांधी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम में हिंदी प्राध्यापक बन गये। डॉ. नायर ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए तथा बिहार विश्व विद्यालय से पीएच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

डॉ. नायर एक प्रखर गांधीवादी थे, जो हिंदी प्रचार-प्रसार को अपना धर्म और गांधीजी के प्रति

पद्मश्री पुरस्कार

हिन्दीरत्न सम्मान

विश्व हिन्दी सम्मान

गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान

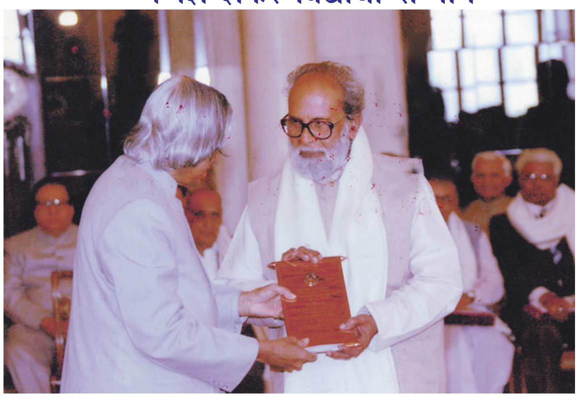

केरल हिन्दी प्रचार सभा डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर पद्मश्री अभिनंदन समारोह

पीएसयू/नवरत्नों-टोलिक पुरस्कार

अपनी भक्ति मानते थे। डॉ नायर भारत के गैर-हिंदी भाषी दक्षिणी राज्य, केरल में राष्ट्रीय एकता के लिए अपने कर्म के रूप में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में संलग्न रहे थे। 16 साल की उम्र में भी वह केरल के विभिन्न हिस्सों के ग्रामीण इलाकों में हिंदी पढ़ाते थे। डॉ एन चन्द्रशेखरन नायर ने साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से हिंदी अध्ययन और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए 1980 में केरल हिंदी साहित्य अकादमी की स्थापना की। पिछले 42 वर्षों से, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी संगोष्ठियाँ और कार्यशालाओं का आयोजन करके, उच्च्व गुणवत्ता वाले शोध के लिए प्रकाशन और त्रैमासिक पत्रिका 'शोध पत्रिका' निकालकर हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभा रही है। अकादमी हिंदी साहित्य और अनुसंधान के क्षेत्र में पूरे भारत की हस्तियों को सम्मानित कर रही है। अकादमी पुरस्कार ,अच्छे हिंदी प्रकाशन निकालने के लिए युवाओं का प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण, आदि कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभा रही है। डॉ. नायर ने अपने भवन में एक संसाधनपूर्ण पुस्तकालय स्थापित किया था जो शोधार्थियों केलिए महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध है। छात्रों और अन्य शोधकर्ताओं को अपने शोध और शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए यह पुस्तकालय सदा कर्मरत है । डॉ नायर के मार्गदर्शन में छह शोधार्थियों ने पीएच.डी. प्राप्त की है। समय के साथ, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी ने केरल में हिंदी साहित्य को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल माहौल बनाया। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी को केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा अनुदान प्राप्त है। अकादमी 180 से अधिक हिंदी लेखकों, विशेषकर भारत के विभिन्न हिस्सों के युवा लेखकों को सम्मानित किया है। अकादमी के प्रकाशन, विशेषक'शोधपत्रिका' राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हैं।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर ने उच्च्व स्तरीय हिन्दी पीएच.डी. प्रबंध के लिए एक पुरस्कार की स्थापना की। 2018 में पहला पुरस्कार प्रदान किया। पुरस्कार जो 50000/- रूपये का है, इसमें प्रशस्ति पत्र और प्रमाण पत्र हर साल दिया जाता है। आपने हिंदी में सर्वश्रेष्ठ प्रबंध प्रस्तुति के लिए स्कूली छात्रों को नकद पुरस्कार भी प्रदान किए ।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर हिंदी और मलयालम के बहुभाषी लेखक थे। आप एक सफल कवि, उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार, शोध निदेशक, चित्रकार, आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हैं।

डॉ. नायर ने हिंदी में 50 से अधिक मौलिक पुस्तकें लिखी हैं। उनकी कई पुस्तकों को भारतीय विश्वविद्यालयों ने पाठ्यपुस्तकों के रूप में चुन ली है। विख्यात लेखकों की अनेक सुप्रसिद्ध कृतियों की आलोचना भी प्रस्तुत की है। भारत और विदेशों में 800 से अधिक पत्रिकाओं में डॉ नायर के लेख प्रकाशित हो गये । यौगिक जीवन जीने वाले डॉ. नायर ने उपनिषद, अध्यात्मरामायण, चिरंजीव, राम-मारुति मिलन, राम की स्तुतियाँ, श्री ललिता सहस्रनाम व्याख्याएँ आदि जैसे महान ग्रन्थों पर आधारित कई धार्मिक प्रकाशन कार्य किये थे। डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर ने सौ से अधिक पेंटिंग बनाई थीं। स्वागत जैसी इंडियन एयरलाइंस पत्रिका में डॉ. नायर की कई चित्र प्रकाशित हुईं। उनकी कई चित्र तिरुवनंतपुरम और नई दिल्ली में प्रदर्शित हुए ।

डॉ. एन चन्द्रशेखरन नायर को 12 सितंबर, 2015 को भोपाल में विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में पूर्व गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह से 'विश्व हिंदी सम्मान' प्राप्त हुआ। उनके जीवनकाल के योगदान को मान्यता देते हुए पूरे विश्व में हिंदी

के प्रचार-प्रसार के लिए भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने डॉ. नायर को विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया। डॉ. नायर को 1983 में नई दिल्ली में आयोजित तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में भी सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया था।

2020 में, डॉ. चंद्रशेखरन नायर को हिंदी भाषा, साहित्य और शिक्षा को बढ़ावा देने में उनकी असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए यूको बैंक द्वारा यूको भारतीयभाषा सौहार्द सम्मान (वर्ष 2019-20) से सम्मानित किया गया था। 2018 में, डॉ. नायर को पीएसयू/नवरत्नों द्वारा टोलिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 2014 में डॉ. नायर को हिंदी भवन, नई दिल्ली द्वारा 'हिंदी रत्नसम्मान' और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'देशरत्न' से सम्मानित किया गया। डॉ. नायर को 2004-05 के लिए गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी लेखकों के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय का पुरस्कार मिला। उन्हें 2005 में भारत के दिवंगत पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से 1 लाख रुपये का प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार, 'गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान' और 2008 में महाराष्ट्र हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को कई प्रमुख भारतीय हस्तियों जैसे स्वर्गीय श्री नरसिम्हा राव, पूर्व वित्त मंत्री, वित्त मंत्री, भारत सरकार, महामहिम श्री बी राचैया, केरल के पूर्व राज्यपाल और श्री लाल कृष्ण आडवाणी, से 'अभिनंदनग्रंथ' प्राप्त हुआ। डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को मदन मोहन मालव्य, विवेकानन्द, प्रेमचंद, एज़ुथाचन, केशवदेव, कवि मुल्ला दाऊद, महर्षि विद्याधि राजा, श्री गणेश शंकर विद्यार्थी आदि जैसे भारतीय विद्वानों और नेताओं के नाम पर पुरस्कार प्राप्त हुआ।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर कई पुरस्कारों और सम्मानों के प्राप्तकर्ता थे। उन्हें प्रतिष्ठित संगठनों/संस्थानों द्वारा स्थापित कई राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार और पुरस्कार प्राप्त हुए। 2020 में, डॉ.एन. चंद्रशेखरन नायर को साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान और सेवा की मान्यता के रूप में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक, 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया था।

डॉ. नायर के आवास के सामने से होकर लक्ष्मीनगर तक जानेवाली सडक का नामकरण नगर निगम ने "पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर रोड" कर दिया।

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर के जीवन-विजय के पीछे उनकी अर्धांगिनी श्रीमती टी.शारदा जी का बड़ा योगदान रहा है। वे केरल के सुविख्यात सर्वोदय नेता प्रो.एम.पी.मन्मथन की सुपुत्री हैं। उनके तीन संतानें हैं बड़ा बेटा शरतचन्द्रन (दिवंगत) दो बेटियाँ श्रीमती नीरजा राजेन्द्रन तथा डॉ.सुनंदा।

"पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर रोड" उद्घाटन समारोह

विचारों के विशारद : डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की निबंध यात्रा

डॉ.अजित्रा.आर.एस

शोध सार

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न लेखक है, जो केरल के हिंदी साहित्यकारों के बीच अपना स्थान बनाने में सफल हुए हैं। उन्होंने हिंदी और मलयाळम दोनों भाषाओं में समान रूप से लिखने का प्रयास किया। उनकी रचनाएँ दक्षिण और उत्तर भारत के बीच एक साहित्यिक सेतु बन गईं। उन्होंने कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार, निबन्धकार आलोचक, चित्रकार आदि विभिन्न रूपों में अपने अद्विवतीय व्यक्तित्व को प्रकट किया है। उनकी समस्त रचनाएँ जन कल्याण की भावना से अनुप्राणित है। डॉ. नायरजी कला, साहित्य, तथा संस्कृति के उदात्त सामंजस्य से चिरस्मरणीय है। डॉ.नायरजी के चिंतन की विविध दिशाओं का अंदाज़ा उनके निबंधों से मिलता है।

बीज शब्द : विचारों के विशारद, निबंध यात्रा, समालोचनात्मक निबन्ध, तुलनात्मक अध्ययन, विषयगत वैविध्य, समसामयिक समस्या।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का जन्म 29 दिसंबर, 1923 को कोल्लम के शास्तांकोट्टा में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री नीलकण्ठ पिळ्ळै और माता का नाम श्रीमती जानकी पिळ्ळै था। चन्द्रशेखरन नायर जी गाँधीजी के प्रभाव से ही हिंदी सीखने का संकल्प लिया। सन् 1968 में उन्हें अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन, बम्बई से "डॉक्टर ऑफ लिटरेचर" तथा "मास्टर ऑफ एजुकेशन" की मानद उपाधियाँ प्राप्त हुई तथा सन् 1977 में बिहार विश्व-विद्यालय मुजफ्फरपुर से "हिंदी और मलयाळम के दो प्रतीकवादी कवि" विषय पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई। वे 'केरल हिंदी साहित्य अकादमी' और 'केरल आर्ट एण्ड लिटरेरी अकादमी' के अध्यक्ष थे।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर तिरुवनंतपुरम के एम.जी कॉलेज में हिंदी के विभागाध्यक्ष थे। कालिकट विश्वविद्यालय की शुरुआत में वे सात साल तक इसकी शिक्षा समितियों के अध्यक्ष रहे तथा वहाँ के भाषा संकाय और परीक्षा-परिष्कार समिति के सक्रिय सदस्य भी बने। सन् 1977 से वे केरल विश्वविद्यालय की शिक्षा समिति और उपसमितियों के सक्रिय सदस्य रहे। इसके अलावा देश के कई अन्य विश्वविद्यालयों के परीक्षक भी रहे। सन् 1977 से 79 तक उन्होंने केरल विश्व विद्यालय में विसिटिंग लेक्चरर के तौर पर काम किया।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का लेखन कार्य सन्1950 से तथा कृतियों का प्रकाशन सन् 1956 से प्रारंभ होता है। नायर जी के प्रथम हिंदी लेख सन् 1956 में आगरा विश्वविद्यालय के के.एम.मुंशी हिंदी विद्यापीठ की मुख पत्र 'भारतीय साहित्य' में प्राकशित हुए थे। उनके रचनाओं में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना, समीक्षा, जीवनी, अनुवाद आदि शामिल हैं। सन् 1961 में उनके प्रथम कहानी 'चमार की बेटी' सारिका टाइम्स ऑफ इण्डिया बम्बई

में प्रकाशित हुई थी। 'द्विवेणी', 'कुरुक्षेत्र जागता है', 'युगसंगम', 'सेवाश्रम', 'देवयानी', 'धर्म और अधर्म' आदि डॉ.नायरजी के बहुचर्चित एवं प्रसिद्ध नाटक हैं। 'हार की जीत' और 'प्रोफेसर और रसोइया' उनकी चुनी हुई कहानियों के संग्रह हैं। 'हिमालय गरज रहा है' उनका एक सुन्दर खण्डकाव्य है। 'चिरञ्जीव' नामक उनका महाकाव्य बहुचर्चित है। "आपकी सारी रचनाएँ भारतीयता की उदघोषणा करने वाली हैं। राष्ट्र प्रेम एवं मानवीय संवेदना से आपकी रचनाएँ अनुप्राणित हैं।"[1] उनकी कई कृतियाँ विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में शामिल की गई हैं। इतना ही नहीं, नायरजी केरल के प्रसिद्ध चित्रकार भी थे। चन्द्रशेखरन नायर अभिनन्दन ग्रन्थ में डॉ.एन.पी.कुट्टन पिळ्ळै का कथन है कि "एक सफल चित्रकार के लिए अपरिहार्य निरीक्षण पाटव, एन्द्रिय संवेदना, भाव-प्रवणता एवं उच्च स्तर की कल्पनाशक्ति का उनमें समन्वय है।"[2] उनकी कई चित्रों को पुरस्कार मिले थे। 'देवयानी', 'प्रोफेसर और रसोइया', 'गौरीशंकर' (अनुवाद) आदि रचनाएँ भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत हुए हैं। डॉ.नायर को सौहार्द पुरस्कार, प्रेमचंद पुरस्कार, विश्व हिंदी सम्मान आदि अनेकों पुरस्कार प्राप्त हुए। हिंदी प्रचार और साहित्यिक सेवाओं के लिए उन्हें 2020 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

नायर जी के बहुत सारे निबंध प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें डॉ.नायर जी के चिन्तन की विविध दिशाओं का बोध होता है। 'निबन्ध मंजुषा', 'भारतीय साहित्य','भारतीय साहित्य और कलाएँ' आदि समालोचनात्मक निबन्धों के संकलन हैं। इन संकलनों में नायर जी द्वारा समय-समय पर लिखे गए उच्चकोटि के साहित्यिक एवं सामाजिक निबंध शामिल हैं। 'डॉ.नायर जी की साहित्यक रचनाएँ (निबंध)', 'गांधीजी भारत के प्रतीक' आदि निबंधों के अतिरिक्त डॉ. नायर जी के करीब 250 निबंध पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए थे।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर ने अगस्त 1966 में प्रकाशित अपने प्रथम निबंध संग्रह 'निबन्ध मंजुषा' में समसामयिक समस्याओं पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। इस संग्रह में लेखक के प्रारंभिक 20 निबंध निहित हैं। इनमें संस्कृति, राजनीति, विज्ञान के आविष्कार कला और साहित्य के विविध अंग तथा देश की विविध समस्याओं - अन्न समस्या, काश्मीर समस्या, भूदान यज्ञ, बेसिक शिक्षा, सहशिक्षा राष्ट्रभाषा का प्रश्न आदि - पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है।"[3]

1967 में प्रकाशित 'भारतीय साहित्य' में 4 आलोचनात्मक निबन्ध संकलित किए गए हैं। नायरजी इस संकलन में मैथिलीशरण गुप्त कृत 'यशोधरा', तुलसी कृत 'रामचरितमानस', उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द कृत 'गबन' उपन्यास, तथा बंगला के प्रसिद्ध नाटककार द्विजेन्द्रलाल कृत 'शाहजहाँ' नाटक आदि की समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हैं। इसमें मैथिलीशरण गुप्त की कालजयी कृति की साहित्यिक दृष्टि में समीक्षा की गई है। "उन्होंने 'यशोधरा' काव्य के अंतरंग और बहिरंग पक्षों पर अच्छा विचार किया है। साथ ही गुप्त जी की 'वैष्णव भावना' और 'बुद्ध की निर्वाण भावना' तथा यशोधरा और बुद्ध के भाव-सामंजस्य की पृष्ठभूमि को भी स्पष्ट किया गया है।"[4]

अक्टूबर 1967 में प्रकाशित 'भारतीय साहित्य और कलाएँ' डॉ.नायर जी के स्वतन्त्र निबंधों का संग्रह है, जो एक शोधपरक समीक्षाकृति है। इसका प्रथम संस्करण में कुल सात निबंध थे, जो दूसरे संस्करण में बढ़कर सोलह हो गये। इस संकलन में उन्होंने मलयाळम साहित्य और हिंदी साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। केरल की कलागत उपलब्धियाँ, केरल साहित्य की प्रवृत्तियाँ, मलयाळम सहित्य, हिंदी साहित्य, मलयाळम-हिंदी दोनों साहित्य के विभिन्न पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन आदि विषय इसमें निहित है। प्रतीक विधान की औपनिषदिक पृष्ठभूमि

तथा भारतीय साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यास का विवेचन आदि भी इस संग्रह में शामिल है। 'एक ओर 'उपनिषदों में प्रतीक विधान' लगाकर हिंदी के तुलसीदास और सूरदास के अध्ययन के बाद आधुनिक साहित्य में मलयाळम की बृहत्रयी में उळ्ळूर.एस. परमेश्वर अय्यर, वळ्ळत्तोळ और जी.शंकर कुरुप्प पर बड़े ही विचारपूर्ण और नई जानकारी देनेवाले लेख हैं। महाकवि 'जी' की तुलना रवीन्द्रनाथ और पंत से की गई है। सबसे अधिक विद्वत्तापूर्ण लेख 'जी' के 'प्रकृति और पुरुष' पर है।"[5] इस संग्रह में 'भारतीय महाकवि श्री जी.शंकर कुरुप्प और हिंदी के सिम्बॉलिक कवि' अधिक महत्वपूर्ण निबंध है। इसमें महाकवि की काव्य-कृति एवं हिंदी की छायावादी कविताओं का हृदयस्पर्शी तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस संग्रह का एक निबंध केरल की कलात्मक उपलब्धियों पर है, जिससे ललित कला में केरल का योगदान स्पष्ट होता है। इस संकलन में केरल की चित्र-कला, मूर्ति-कला, वास्तु-कला और दारुशिल्प आदि पर बहुमूल्य लेख हैं।

सन् 1993 में प्रकाशित 'डॉ.नायर जी की साहित्यक रचनाएँ (निबंध)' नामक संग्रह में 52 निबंध संकलित हैं। इस संग्रह को तीन विभागों में विभाजित किया है। प्रथम भाग के अन्तर्गत 'निराला की प्रतीक योजना', वळ्ळत्तोळ एवं अन्य राष्ट्र कवि, भारतीय महाकवि श्री वल्लत्तोल नारायण मेनोन, सूर साहित्य और मलयाळम का कृष्ण काव्य, शुक्लोत्तर हिंदी समीक्षा साहित्य को दक्षिण के हिंदी समीक्षकों का योगदान, जी.शंकर कुरुप्प की कविताओं में ध्वनि और अलंकार, मैथिलीशरण गुप्त जी का श्रेष्ठ विरहकाव्य-यशोधरा, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में भारतीय नारी की अस्मिता-विशेषकर यशोधरा के सन्दर्भ में, हिंदी की श्रीवृद्धि में मुसलमान कवियों का योगदान, मैथिलीशरण गुप्त कालीन मलयाळम काव्य चेतना, सन् 1970 से 1985 तक का हिंदी नाटकः सामाजिक बदलाव के परिप्रेक्ष्य में, मुक्तिबोध और उनके स्वप्न चित्र, स्वतन्त्रता आन्दोलन में हिंदी की भूमिका, हिंदी के लब्ध-प्रतिष्ठित कविवर जयशंकर प्रसाद, स्वतन्त्र भारत में संस्कृति पुनर्जागरणः साहित्य के क्षेत्र में, त्रिवेणी-भूमिका, दिनकर के कुरुक्षेत्र में अहिंसा और विश्वशान्ति का स्वर, केरल में हिंदी की स्थिति, केरल के हिंदी साहित्य का इतिहासः प्रारूप, हिंदी की चिन्दी उड़ाने वालों से देश नहीं बनता, सांस्कृतिक प्रतिष्ठा के पुरोधाः हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, कवि अथवा साहित्यकार की भूमिका, प्रेमचन्द के स्त्री पात्र' आदि विषयक निबन्ध आते हैं। 'मैथिलीशरण गुप्त जी का श्रेष्ठ विरह काव्य-यशोधरा' में डॉ.नायर जी इस प्रकार कहते हैं कि "यह सत्य है कि विरहावस्था में मिलन से अधिक गम्भीरता है। प्रेमी युगल विरह में मिलन की अपेक्षा अधिक मानसिक सामीप्य प्राप्त कर लेते हैं। अगर उनके मन में एक दूसरे के प्रति मैल हो तो वह विरह में गल जाती है। पश्चात प्रेम की सघनता तथा तीव्रता बढ़ जाती है।"[6]

द्वितीय भाग के अन्तर्गत 'सर्वोदय, केरल की कलागत उपलब्धियाँः चित्रकला मूर्तिकला, वास्तुकला, सीमोल्लंघन, रामचरितमानस का कथा शिल्प, जगदम्बा श्री मूकाम्बिका, राजयोग हठयोग और गोरखनाथ (सांस्कृतिक निबन्ध), एषुत्तच्चन कृत मलयाळम अध्यात्म रामायण के हिंदी अनुवाद की भूमिका (भूमिका लेखन), गीता प्रवचनः जीवन और उसके मूल्यों का संचालक, केरल की ऋषि परम्परा और महर्षि विद्याधिराज महाराज, त्रिवेन्द्रम वाले अजायबघर में रखे हुए दारुशिल्प, अट्टप्पाटि के गिरिजनः इरुलर, लोकनर्तन और केरलः भारतीय लोकनर्तनों के परिप्रेक्ष्य में, पन्द्रह अगस्त 1987, गांधी जी का सर्वोदय संकल्प एवं भारतीयता प्रतीक, देश की एकता के बाधक तत्त्व' आदि निबन्ध संकलित हैं।

तृतीय भाग में 'अणु युग में भी ऋषि की प्रभुता, कवीन्द्र रवीन्द्र की गीतांजलि को कैसे नोबल पुरस्कार मिला? उसकी कैसी-कैसी प्रतिक्रियाएँ हुई?, कवीन्द्र रवीन्द्रः सुमित्रानन्दन पन्तः जी.शंकरकुरूप्प, सत्य को पाने का मार्ग, भारतीय साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यास, उपनिषदों में प्रतीक विधान, भारतीय महाकवि श्री जी.शंकर कुरुप्प और हिंदी के सिम्बॉलिक कवि, चित्रकला सम्राट् राजा रविवर्मा और समकालीन भारतीय चित्रकार, भारत केसरी मन्नतु पद्मनाभन, भारतीय साहित्य की अन्तर्धारा, स्वामी विवेकानन्द का समाजवाद संकल्प, राष्ट्रीय एकता का स्वर- मलयाळम साहित्य में, मद्यनिरोध लाकर देश को बचाओ, हिंदी रंगमंच अथवा रंगशाला आदि विषयों पर डॉ.नायर जी ने अपनी लेखनी चलाई है।

डॉ.नायर जी का 'गांधी जी भारत के प्रतीक' नाम से एक समीक्षात्मक निबन्ध संग्रह सन् 1998 में प्रकाशित हुआ। प्रथम भाग के अन्तर्गत भारतीय संस्कृति और अंहिसा का सिद्धान्त, गांधी जी सर्वोदय संकल्प एवं भारतीयता प्रतीक और अन्त में उपसंहार दिया है। 'यह निबंध संग्रह गांधी जी के प्रति डॉ.नायर जी के आदर, श्रद्धा और भक्ति भावना की प्रतीक है साथ ही गांधी दर्शन को सूक्ष्मता से समझने, परखने और उसे अपनाने में भी सक्षम है।"[7]

डॉ.नायर जी के सभी निबंधों में विषयगत वैविध्य दृष्टिगोचर होता है। जिससे लेखक के चिन्तन की विविध दिशाओं का बोध होता है। डॉ. नायर की रचनाओं का मूल स्वर राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक है। डॉ. नायरजी ने अपने साहित्य के माध्यम से न केवल जीवन मूल्यों को स्थापित किया बल्कि भाषाई असमानता को भी मिटाने का प्रयास किया। अपनी रचनाओं के माध्यम से डॉ.नायर जी को भारतीय संस्कृति का सच्चा आख्याता माना जा सकता है। उन्होंने कला और साहित्य दोनों के प्रति अपने दायित्व को निभाया। इस प्रकार नायर जी के निबंधों से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह विचारों के एक महान विशारद ही थे।

संदर्भ :

1. डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर - केरल के हिंदी साहित्य का बृहद् इतिहास, पृ.सं. : 163, केरल हिंदी साहित्य अकादमी, तिरुवनंतपुरम
2. डॉ.एन.पी. कुट्टन पिल्लै - मेरे आदरणीय आचार्य, पृ.सं.29, चन्द्रशेखरन नायरः अभिनन्दन ग्रन्थ, चन्द्रशेखरन नायर अभिनन्दन समिति, दिल्ली
3. डॉ.मुरारि लाल शर्मा 'सुरस' - डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर के निबंधः एक मूल्यांकन, पृ.सं. 148, चन्द्रशेखरन नायरः अभिनन्दन ग्रन्थ, चन्द्रशेखरन नायर अभिनन्दन समिति, दिल्ली
4. डॉ.मुरारि लाल शर्मा 'सुरस' - डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के निबंधः एक मूल्यांकन, पृ.सं. : 149, चन्द्रशेखरन नायरः अभिनन्दन ग्रन्थ चन्द्रशेखरन नायर अभिनन्दन समिति, दिल्ली
5. डॉ.प्रभाकर माचवे - दक्षिण के हिंदी सेवी डॉ.नायर, पृ.सं. : 72, चन्द्रशेखरन नायरः अभिनन्दन ग्रन्थ चन्द्रशेखरन नायर अभिनन्दन समिति, दिल्ली
6. डॉ.एन चंद्रशेखरन नायर - मैथिली शरण गुप्त जी का श्रेष्ठ विरह काव्य यशोधरा, पृ.सं.: 58, डॉ. नायर की साहित्यिक रचनाएँ (निबंध साहित्य) श्रीनिकेतन प्रकाशन, तिरुवनंतपुरम
7. डॉ.रेखा शर्मा - केरल का स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य (डॉ.एन चंद्रशेखरन नायर के विशिष्ट संदर्भ में) पृ.सं.: 114, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, श्री नारायणा कॉलेज, चेम्पष़ंती, तिरुवनंतपुरम, केरल

डॉ. एन चंद्रशेखरन नायर का उपन्यास 'सीतम्मा'- एक अध्ययन

डॉ.बिंदु.सी.आर

हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में अहिंदी भाषा क्षेत्र का योगदान गौरवशाली है। भारत के दक्षिणी छोर पर स्थित केरल राज्य ने भी हिंदी भाषा के विकास में बहुत योगदान दिया है। हिंदी के प्रचार - प्रसार में केरल के हिंदी साहित्यकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनमें सबसे उल्लेखनीय नाम आदरणीय डॉ. एन चंद्रशेखर नायर का है। उनके द्वारा लिखी गई साहित्यिक रचनाएँ हिंदी साहित्य के अनमोल रत्न के रूप में चमकती हैं। साहित्यकार, अध्यापक, बहुभाषा विद्वान, चित्रकार, समाज सेवी आदि विभिन्न रूपों में हमें अपनी सेवाएँ उन्होंने प्रदान की हैं। बिना किसी संदेह से हम कह सकते हैं कि आप एक बहुमुखी प्रतिभावान साहित्यकार हैं। कविता, नाटक, कहानी, निबन्ध, उपन्यास आदि साहित्य की सभी विधाओं में अपने अपनी तूलिका चलाई है। हिंदी के अलावा अपनी मातृभाषा में भी रचनाएँ करके मातृभाषा के प्रति अपना कर्तव्य निभाया है। आप एक सच्चे गाँधीवादी थे। आपने गाँधीजी के आदर्शों के प्रचार प्रसार के साथ उन्हें अपने लेखन में प्रमुख स्थान देने को ध्यान दिया है। अपने 99 वर्ष की जीवन यात्रा में हिंदी भाषा की सेवा के साथ अपने समाज के सुधार एवं गाँधीजी के दर्शन के प्रचार में कार्यरत रहे। आपके द्वारा मलयालम में रचित 'सीतम्मा' नामक उपन्यास के अध्ययन का एक लघु प्रयास यहाँ समर्पित कर रही हूँ।

आपके शब्दों से समझ सकता है 'सीतम्मा 'की रचना आपने 1963 को शुरू की है। दस वर्ष के बाद सन् 1973 में इसकी पूर्ति की।[1] 'सीतम्मा' की कथावस्तु इस प्रकार है- सीतम्मा एक पढ़ी-लिखी युवती है। अध्यापिका बनने की शैक्षिक योग्यता प्राप्त करके वह गाँव के एक विद्यालय में काम कर रही थी। उसके संरक्षण के लिए माता-पिता, अन्य भाई-बहन या रिश्तेदार नहीं थे। देखने में बहुत सुंदर नारी थी सीतम्मा। आदर्शों पर अटल होकर जीनेवाली। गाँधीजी के दर्शन से प्रभावित नारी थी सीतम्मा। बीच में किसी समय उसकी ज़िंदगी में और एक स्त्री का प्रवेश हो गया, उसे वह 'कुंजम्मा' कहकर पुकारती थी। वहाँ अनाथ लोगों का संरक्षण करके आश्रम चलाने वाली एक औरत गौरिअम्मा सीतम्मा से मिलने आई। उसे सब लोग माता कहकर पुकारते थे। गौरिअम्मा का पुत्र मनोहर से सीतम्मा प्रेम करती थी। मनोहर भी सीतम्मा से प्यार करता था। यह जानकर गौरिअम्मा सीतम्मा को आश्रम ले जाना चाहती है।

गौरिअम्मा, सीतम्मा को अपनी बेटी के समान मानती थी और उसके चरित्र का सम्मान करती थी।

कुंजम्मा के साथ रहते समय सीतम्मा ने सावित्री नामक गर्भवती स्त्री को आश्रय देती है और सावित्री सीतम्भा के घर में एक बच्चे को जन्म देती है। यह जानकर गौरिअम्मा सावित्री और बच्चे को आश्रम में ले गई। स्कूल में एक अध्यापक का पद रिक्त होने पर सीतमा ने सावित्री के लिए सिफारिश की। सावित्री को स्कूल में नौकरी मिली। लेकिन सावित्री की नियुक्ति स्कूल एवं सीतम्मा के लिए कठिनाई बन

गई। सावित्री के व्यवहार में आये परिवर्तन पर सीतम्मा एवं गौरिअम्मा ने ध्यान दिया। सावित्री और केशवपिल्लै दोनों मिलकर सीतम्मा के विरुद्ध काम करने लगे। इसलिए सीतम्मा को कई आलोचनाओं का सामना करना पड़ा। सावित्री ने कई अभियान चलाये। पर जब नौकरी के अवधि की पूर्ति हो गई तब सावित्री बच्चे को आश्रम में छोड़कर भाग गई। इस बात पर आश्रम की संचालिका गौरिअम्मा दुखी बन गयी।

सीतम्मा को आश्रम ले जाने में गौरिअम्मा पराजित हो गयी। इस समय अपने बारे में प्रचलित बुरी बातों पर दुखी होकर सीतम्मा नौकरी छोड़कर अपने घर से बहुत दूर, एक घर किराए पर लेकर कुंजम्मा के साथ रहने लगी। सीतम्मा के मन में डर था कि मनोहरन और गौरिअम्मा ने भी इन बातों पर विश्वास लेकर उसे छोड़ दिया है। पर गौरीअम्मा ने सीतम्मा की तलाश की और असफल निकली। वह बीमार बन गई और उसकी मृत्यु भी हुई। इन सब बातों को जाने बिना मनोहरन कहीं दूर चला गया और आध्यात्मिक बातों पर आकृष्ट होकर रहने लगा। सीतम्मा को भी वह भूल गया था। मरने के पहले गौरिअम्मा ने अपनी वसीयत में आश्रम का दायित्व सीतम्मा को दिया। बीच में मनोहरन ने एक दुर्घटना में पड़ी मेरीना नामक विदेशी वनिता की रक्षा की और उसे आश्रम में भेज दिया। मेरीना को गौरिअम्मा ने विश्वास में ले लिया और वसीयत को मेरीना के हाथों पर सौंप दिया। सीतम्मा की तलाश में निकली मेरीना भी असफल निकली।

सीतम्मा के घर में करुणन नामक एक अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का छात्र रहने आया। अकसमात मरीना की मुलाकात सीतम्मा से हो गई। मेरीना ने सारी बातें सुनाईं। सीतम्मा के दुख की सीमा न थी। लेकिन सीतम्मा आश्रम चलने को और दायित्व लेने को तैयार नहीं हुई। अंत में दोनों के बीच में बहुत अधिक दोस्ती हो गयी और सीतम्मा आश्रम का दायित्व लेने को तैयार हो गई। उद्घाटन के अवसर पर मनोहरन भी वहाँ आया। वह पूर्ण रूप से एक सन्यासी बन गया था। तीव्र दुख में सीतम्मा रामायण की सीता की तरह धरती माँ से आश्रय देने की प्रार्थना की ।

इस प्रकार सीतम्मा की कथावस्तु केरलीय सामाजिक परिवेश में जीनेवाली एक साधारण नारी से संबंधित है। 1973 में पूर्ण हुए प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु आज भी प्रासंगिक है। इसलिए यह उपन्यास कालजयी है।

उपन्यास के सभी पात्रों की रचना एवं चरित्र-चित्रण उपन्यासकार ने अत्यधिक सतर्कता से किया है। उपन्यास की नायिका सीतम्मा आज भी हमारे बीच में जीवित है। एक पढ़ी -लिखी महिला को अपनी ज़िंदगी में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी वह बेसहारा बनकर रोती है। फिर कुछ कोमल भावनाओं के बल पर वह आगे बढ़ती है। अपनी जिम्मेदारियों से वह भागती नहीं। उपन्यसकार के निजी जीवन की दार्शनिकता को आपने यहाँ दर्शाया है। उन्हें पाठकों तक पहुँचाने में आप सफल बन गए हैं।

उपन्यास का और एक पात्र है मनोहरन। सीतम्मा से आकृष्ट होकर उससे प्रेम करता है, पर आध्यात्मिकता के सामने वह सब कुछ भूल जाता है। पर उसकी यह चिन्ता एक नारी के जीवन को त्रासदी बना देती है।

गौरिअम्मा इस उपन्यास का और एक प्रमुख पात्र है। आज भी गौरिअम्मा के समान अनेक ममतामयी स्त्रियों को हम देख सकते हैं। अपने पुत्र के व्यवहार से गौरिअम्मा दुखी बन जाती है। पर पुत्र की प्रेमिका सीतम्मा से एक असली माँ जैसा व्यवहार करती है और मरने के पहले आश्रम का दायित्व सीतम्मा पर सौंपकर समाज से अपना जो दायित्व है उसे निभाती है।

केशव पिल्लै और सावित्री जैसे कई लोग समाज में जीवित हैं, जो खुद तो नहीं जीते हैं और दूसरों को जीने नहीं देते हैं। इसी बीच करुणन की तरह निस्वार्थ सेवा करने को तत्पर लोग बहुत विरले ही मिलते हैं। एक रूसी युक्ति होने पर भी मेरीना भारतीय संस्कृति एवं दर्शन से आकृष्ट है। साथ ही वह भारत में आकर निस्वार्थ सेविका का प्रतीक बनकर जीने लगती है। इस उपन्यास में चंद्रशेखरन नायरजी द्वारा चित्रित अन्य पात्र जैसे-कुंजम्मा, नारायणन आदि कथानक को आगे बढ़ाने के लिए उपयुक्त हैं।

बहुत सुंदर प्रवाहमयी मलयालम भाषा एवं आँचलिकता का प्रयोग भी 'सीतम्मा' के रचयिता ने यहाँ किया है। युद्ध, राजनीति, धर्म[2] आदि के बारे में आपके मन में जो व्यक्त धारणाएँ थीं, उनको उपन्यास में कभी-कभी सीतम्मा, मेरीना, मनोहरन आदि के द्वारा प्रस्तुत करने की कोशिश की है। डॉ. चंद्रशेखर नायर जी भौतिक आनन्द की अपेक्षा आध्यात्मिक आनन्द को प्रधान देने वाले तत्वों को अपनी रचनाओं द्वारा प्रस्तुत करने की कोशिश करते थे। 'सीतम्मा' नामक उपन्यास में आपने इसको प्रधानता दी है। साथ ही आपने अपने देश की महत्वपूर्ण संस्कृति और परंपरा को इस उपन्यास में प्रमुख स्थान दिया है। आपने यहाँ गीता[3] के महत्वपूर्ण वचनों को उद्धृत करके बुरी हालत को काबू करने का उपाय बता दिया है। आपने इस उपन्यास में केरल की प्राकृतिक सुन्दरता का शब्द चित्र खींच लिया है।[4]

संक्षेप में डॉ.एन चंद्रशेखरन नायर का उपन्यास 'सीतम्मा' पाठकों को एक अविस्मरणीय अनुभव बनकर रहेगा और हिंदी उपन्यास क्षेत्र में एक खूबसूरत सितारा बनकर चमकेगा।

संदर्भ :

1. 'सीतम्मा'-डॉ .एन .चन्द्रशेखरन नायर (സീതമ്മയെപ്പറ്റി)
2. 'सीतम्मा'- डॉ एन चन्द्रशेखरन नायर। पृष्ठ संख्या 274,275
3. ,, पृष्ठ संख्या 77
4. ,, पृष्ठ संख्या 30 ,200

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. डॉ.एन चंद्रशेखरन नायर, जीवन और साहित्य तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2016
2. 'सीतम्मा',डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर, श्री निकेतन प्रकाशन, तिरुवनन्तपुरम, 1992
4. 'सीतम्मा'-डॉ.एन चन्द्रशेखरन नायर, हिंदीअनुवाद 'सीतम्मा' - अनुवादक : कवियूर शिवरामय्यर, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, लक्ष्मी नगर, तिरुवनन्तपुरम,1993
5. 'केरल के हिन्दी साहित्य का इतिहास': डॉ.पी.लता, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2016.

एच.एस.एस.टी. हिंदी

सरकारी मॉडल एच.एस.एस, पुन्नमूड, तिरुवनन्तपुरम।

डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर भारत के पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत श्री. अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ

भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता के अनन्य पुजारी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर : निबन्धों के विशेष संदर्भ में

डॉ.धन्या एल

साहित्य मानवीय संस्कृति का एक विशिष्ट सांस्कृतिक व्यापार एवं संचार प्रबंध है। लेवी हाइमन का विचार है - "मानव तो आते और चले जाते हैं, लेकिन जिस साहित्य की वे सृजन करते हैं, वह उनके उपरांत भी जीवित रहता है और समाज को उत्तेजित करनेवाला खमीर बनता है।"[1] साहित्य की विविध विधाओं में अधिकारपूर्वक लिखनेवाले 'कलम के धनी' एवं 'हिंदी के अनन्य सेवी' हैं डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर। आपने कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता, निबन्ध, आलोचना आदि विविध साहित्य शाखाओं द्वारा हिन्दी साहित्य भंडार को अमूल्य मणियों से समृद्ध किया।

डॉ.नायर जी का जन्म केरल के कोल्लम जिले के शास्तांकोट्टा नामक गाँव में एक साधारण, पर धर्मनिष्ठ और देशभक्त परिवार में हुआ। हमारे देश की संस्कृति विशाल है। डॉ.नायर जी की रचनाओं का मूल स्वर भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना है। 'जो निर्धन है उनकी सेवा ही ईश्वर की सेवा है'-डॉ. नायर जी इस आदर्श पर विश्वास रखते हैं। डॉ. विजयेंद्रस्नातक के शब्दों में "डॉ. नायर को मैं उन लेखकों में स्थान देता हूँ जो राष्ट्रीय - सांस्कृतिक विषयों को समसामयिक युग-संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं और अपने प्रस्तुतीकरण में भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का सन्निवेश करने नहीं भूलते।"[2] दक्षिण भारत में रहकर हिंदी भाषा और साहित्य की जो सेवा डॉ. नायर ने की है वह राष्ट्रीय भावना तथा भावनात्मक एकता का उज्ज्वल प्रतीक है। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा 'विश्व बंधुत्व' का संदेश प्रसारित किया है। डॉ.नायर जी के सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्राण है 'भारतीय एकता', साथ ही उनका प्रत्येक कार्य भारतीय संस्कृति की पूजा में अर्पित पुष्प है। उन्होंने भारत की एकता, हिन्दी का संरक्षण, सांस्कृतिक चेतना, कलात्मक अभिव्यक्ति, धर्म का अवबोधन आदि विषयों पर लिखा है। सत्य, न्याय, अहिंसा, मानव प्रेम, उदारता आदि मानव के स्थाई गुण उनकी रचनाओं में उपस्थित हैं।

डॉ. नायर जी की प्रतिबद्धता भारत और उसकी पुरातन वैदिक संस्कृति के साथ है। भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय भावना, कर्मठता, त्याग, वीरता आदि उनकी रचनाओं में स्थित हैं। डॉ.नायर जी मानवतावादी साहित्यकार हैं। उनकी रचनाओं में जन-जीवन की विभिन्न समस्याओं का चित्रण हुआ है। घृणा और ध्वंस के स्थान पर प्रेम और मानवीय मूल्यों के प्रति उनकी बड़ी आस्था है। देशभक्ति की भावना और राष्ट्रीयता की अनुगूँज आपकी समस्त कृतियों में विद्यमान है। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी परंपरागत भारतीय सांस्कृतिक आदर्शों में गहन आस्था रखते हैं। वे विश्वास करते हैं कि हमारे सांस्कृतिक उच्चादर्श चिर पुरातन होने पर भी चिर नवीनतम है। आप राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के आराधक हैं। उनके आदर्शों के प्रति प्रेरित हैं।

डॉ.नायर जी राष्ट्रीयता के सशक्त साहित्यकार हैं। इसलिए सामाजिक मूल्यों को राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य

में विभिन्न विधाओं में प्रस्तुत करते हुए सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ बनाते हैं। डॉ.नायर जी भारतीय नव जागरण के लेखक हैं। भारतीय संस्कृति और भारत की सांस्कृतिक एकता में उनका अखण्ड विश्वास है। भारतीय संस्कृति से प्रेरित उनकी साहित्य-साधना के प्रेरक स्तंभ वेद, उपनिषद्, पुराण आदि हैं। डॉ.नायर जी के शब्दों में "यही संस्कृति अनेक युगों के गुणों का समावेश करके एक नए युग के मनुष्य का निर्माण करती है।"[3] भारत की प्राचीन परंपराओं में डॉ.नायर जी की गहनतम आस्था है। उनकी सभी रचनायें प्राचीनता और नवीनता का सुन्दर समन्वय है। पौराणिक पात्रों के साथ-साथ आम व्यक्ति के यथार्थ जीवन को भी डॉ.नायर जी ने अपने साहित्य का अंग बनाया है।

हिन्दी का 'निबन्ध साहित्य' वर्तमान की देन है। निबन्ध का शाब्दिक अर्थ है - 'बन्धन रहित'। आचार्य रामचन्द्रशुक्ल के शब्दों में -"यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबन्ध में ही सबसे अधिक संभव होता है।"[4] डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का आदर्शमय जीवन अनेक विशिष्ट गुणों से संपन्न है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ.नायर जी एक सशक्त निबन्धकार हैं। निबन्धों द्वारा भी आपने अपने भावों की अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है।

डॉ.नायर जी का हरेक निबन्ध भारतीय सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ बनाता है। निबन्ध मंजूषा (1966), भारतीय साहित्य (सन्1967), भारतीय साहित्य और कलाएँ (सन्1967), डॉ.नायर की साहित्य रचनाएँ (सन् 1993), गाँधीजी भारत के प्रतीक (सन्1998) आदि डॉ.नायर जी के निबन्धों के संकलन हैं। इनमें डॉ. नायर के समय-समय पर लिखे गए उच्च कोटि के साहित्यिक तथा सामाजिक निबन्ध संग्रहीत हैं। विविध विषयों पर लिखे गए निबन्ध उनकी विचारधारा, चिंतन व मान्यताओं को स्पष्ट करते हैं। डॉ. नायर जी के निबन्ध संकलनों में भारतीय संस्कृति के उच्चादर्शों की महिमा का गायन यत्र-तत्र हुआ है।

डॉ. नायर जी उच्चकोटि के साहित्यकार हैं। जब डॉ.नायर जी समाज, संस्कृति, साहित्य और लोकहित पर निबन्ध लिखते हैं तब वे कल्पना-जगत में विचरण न करके जगत एवं जीवन के साथ संपृक्त करते हैं। डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर जी की प्रथम निबन्ध पुस्तक 'निबन्ध मंजूषा' सन् 1966 में प्रकाशित हुई, जिसमें समसामयिक समस्याओं, विविध विषयों, राजनीति, कलाओं आदि पर उन्होंने अपने विचार प्रकट किए हैं। इस संकलन में बीस निबन्ध संग्रहीत हैं। इसमें संकलित निबन्ध जो संस्कृति, राजनीति, विज्ञान के आविष्कार, कला और साहित्य के विविध अंग तथा हमारे देश की विविध समस्याओं - अन्न समस्या, कश्मीर समस्या, भूदान यज्ञ, सह शिक्षा, बेसिक शिक्षा, राष्ट्रभाषा का प्रश्न आदि पर प्रकाश डालते हैं। इस संकलन के लेख हिन्दी के विद्यार्थियों को दृष्टि से रखकर लिखे गए हैं। उनकी विषय-वस्तु तथा प्रतिपादन शैली प्रशंसनीय है। केरल में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं छात्रों में हिन्दी प्रेम बढ़ाने की दिशा में यह निबन्ध संकलन महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

दूसरा निबन्ध संकलन 'भारतीय साहित्य' सन् 1967ई में प्रकाशित हुआ, जिसमें चार आलोचनात्मक निबन्ध संकलित किए गए हैं। इनमें से तीन निबन्ध विशिष्ट हिंदी कृतियों - मैथिलीशरण गुप्त कृत 'यशोधरा', तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस', प्रेमचन्द कृत 'गबन' - का समीक्षात्मक विवेचन प्रस्तुत करते हैं और एक निबन्ध बंगला के ख्यातिलब्ध नाटककार द्विजेंद्रलाल राय की अमरकृति 'शाहजहाँ' का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। डॉ.नायर जी ने गुप्त जी की कालजयी कृति 'यशोधरा' की

साहित्यिक दृष्टि में समीक्षा की है। भारतीय संस्कृति ने नारी को परम आदरणीय मानकर पूज्य पद दिया है। डॉ.नायर जी आदर्शवादी कलाकार हैं और उनमें नारी के प्रति सम्मान और श्रद्धा का भाव है। उन्होंने नारी के आदर्शमयी स्वरूप का गुणगान किया है। उन्होंने उपेक्षित नारियों - यशोधरा, कैकेयी, विष्णुप्रिया और ऊर्मिला-की समान भाव-भूमियों का तुलनात्मक रूप बड़ी मार्मिकता से स्पष्ट किया है। डॉ.नायर जी ने लिखा है - "नारी को भारतीय संस्कृति में श्रद्धा माना गया है। प्रेम, करुणा, उदारता और त्याग जैसे गुणों का विकास-बिन्दु नारी ही है।"[5] डॉ.नायर जी ने 'यशोधरा' के चरित्र की व्याख्या करते हुए उसके आदर्श पत्नी, आदर्श माता और उपेक्षिता विरहिणी रूपों की व्याख्या की है और 'यशोधरा' को एक भाव प्रधान गीतकाव्य कहा है।

इस संकलन का दूसरा निबन्ध है 'रामचरितमानस'। तुलसी के राम, लोक नायक तुलसी, तुलसी का राम राज्य, रामचरितमानस का कलापक्ष, अभिव्यंजना पक्ष आदि उपशीर्षकों द्वारा डॉ.नायर जी ने 'रामचरितमानस' और 'तुलसी' की महत्ता को उजागर करने का प्रयत्न किया है। इसके साथ ही गाँधीवादी युग में उसके वैचारिक समन्वय और सांस्कृतिक एकता बनाए रखने की क्षमता की ओर भी संकेत किया है। डॉ. नायर जी भारतीय नवजागरण के अग्रदूत हैं। उनमें परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय है। गाँधीवादी डॉ. नायर जी ने भारत में समन्वय साधना की परंपरा की आधुनिक कड़ी के रूप में गाँधीजी का उल्लेख किया है। डॉ. नायर जी का विचार है 'राम राज्य का अर्थ अयोध्यापति राम की पूज्य व्यवस्था मात्र नहीं है। पीड़ित मानव के संकल्प में जिस सुख-समृद्ध राज्य का स्वप्न आयेगा वही रामराज्य है।"[6] इस प्रकार अद्‌भुत चिंतन शक्ति के धनी डॉ.नायर जी 'रामचरितमानस' को आधुनिक दृष्टि से देखकर वर्तमान संदर्भों में उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत संकलन का तीसरा निबन्ध है 'प्रेमचन्द कृत गबन'। गबन प्रेमचन्द के प्रसिद्ध उपन्यासों में से एक है। इस निबन्ध में डॉ.नायर जी ने इस तथ्य को स्पष्ट किया है कि "गबन में प्रेमचन्दजी ने सामाजिक समस्याओं की अपेक्षा चरित्र की व्यक्तिगत समस्याओं को ही प्रधानता दी है।"[7] इस संकलन का अंतिम निबन्ध है 'शाहजहाँ'। प्रसिद्ध बंगला नाटककार द्विजेंद्रलाल राय के नाटक 'शाहजहाँ'-की समीक्षात्मक आलोचना इस निबन्ध में प्रस्तुत की गयी है। इस संग्रह में संकलित निबन्धों का समीक्षात्मक विवेचन उत्कृष्ट रहा है। डॉ. विष्णुशंकर इन्दु जी ने इन निबन्धों के संबन्ध में अपने विचार प्रकट किए हैं - "लेखक की समीक्षात्मक दृष्टि पैनी है जो सूक्ष्म पक्ष को भी पकड़ने में समर्थ है।"[8]

सन् 1967 में प्रकाशित 'भारतीय साहित्य और कलाएँ' डॉ.नायर जी के स्वतंत्र निबन्धों का संग्रह है। इसमें सोलह निबन्ध हैं। इसमें हिन्दी साहित्यालोचना पर दो तथा केरलीय और मलयालम साहित्य से संबन्धित छह, हिन्दी और मलयालम साहित्य के विभिन्न पक्षों के तुलनात्मक अध्ययन पर चार, इनके अतिरिक्त 'तुलसीमानस संदर्भ में' रामचरितमानस का कथा शिल्प, 'सूर-साहित्य संदर्भ' में सूर साहित्य, मलयालम का कृष्ण-काव्य, उपनिषदों में प्रतीक विधान आदि निबन्ध संकलित हैं। इस निबन्ध संकलन द्वारा डॉ.नायर जी ने हिन्दी जगत को दक्षिणांचल के महत्वपूर्ण साहित्य एवं कलाकृतियों से परिचित कराने का सफल प्रयत्न किया है। इस संग्रह का सर्वाधिक महत्वपूर्ण निबन्ध है 'भारतीय महाकवि जी शंकर कुरुप और हिन्दी के सिम्बोलिक कवि।' यह निबन्ध उत्तर और दक्षिण के दो महान कवियों की कविताओं

के साम्य-वैषम्य के रेखांकन के साथ-साथ वैविध्य में एकत्व को संजोनेवाली भारतीय संस्कृति की अस्मिता का उद्घोषक भी है। इस संग्रह में संकलित सभी निबन्ध समीक्षात्मक हैं। इन निबन्धों का सबसे महत्वपूर्ण स्वर भारतीयता का है जो डॉ.नायर जी के समग्र साहित्य का प्राण है।

सन् 1993 में प्रकाशित - 'डॉ.नायर की साहित्यिक रचनाएँ' शीर्षक निबन्ध संग्रह में बावन निबन्ध संकलित हैं। यह राष्ट्रीयता, भाषा समस्या, सर्वोदय आन्दोलन, विविध ललितकला-परिचय, केरल की साहित्यिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, रामकथा की व्यापकता और कतिपय प्रमुख महात्माओं, महापुरुषों तथा विशिष्ट साहित्यकारों आदि से संबन्धित संकलन हैं।

'गाँधीजी भारत के प्रतीक' निबन्ध सन् 1998 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह के समस्त निबन्ध गाँधीजी को आधार बनाकर लिखे गये हैं, जैसे - भारतीय संस्कृति और अहिंसा का सिद्धांत, गाँधीजी का सर्वोदय संकल्प एवं भारतीयता प्रतीक, गाँधीजी का संदेश भारत का संदेश,आदर्श ग्राम अथवा ग्राम स्वराज्य, गाँधीजी का जीवन दर्शन हिन्दी साहित्य में, सर्वोदय और गाँधीजी आदि। इन निबन्ध संग्रहों के अतिरिक्त डॉ. नायर जी के करीब दो सौ पचास निबन्ध पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए हैं।

संक्षेप में कह सकते हैं कि डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर जी ने अपने निबन्ध साहित्य द्वारा भारतीय संस्कृति को पुनरुज्जीवित किया है। देश भक्ति की भावना और राष्ट्रीयता की अनुगूँज उनकी समस्त कृतियों में विद्यमान है। डॉ. नायर जी संस्कृति और सभ्यता को सर्वोपरी मानते थे। वे त्याग, तपस्या, करुणा, सत्य, अहिंसा, न्याय, शांति जैसे मानवीय मूल्यों को भारतीय संस्कृति के आधार मानते थे। आपकी रचनाएँ कालजयी एवं प्रासंगिक हैं। भारतीय संस्कृति के अनन्य पुजारी डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर जी अपने निबंधों में भारतीय संस्कृति की बहुमूल्य मणियों को पिरोकर माँ भारती का अलंकरण करते हैं।

संदर्भ :

1. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के साहित्य में सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना, डॉ.पंडित बन्ने, क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 15 - कानपुर, 2013, पृ.सं.7
2. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर संवेदना और अभिव्यक्ति, डॉ.अमरसिंह वधान, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली, 2008, पृ.सं.33
3. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर अभिनन्दन-ग्रन्थ, क्षेमचन्द 'सुमन', डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर अभिनन्दन समिति, दिल्ली, 2014, पृ.सं.72
4. केरल का स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य (डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के विशिष्ट संदर्भ में), डॉ.रेखा शर्मा, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली, 2004, पृ.सं.311-312
5. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर अभिनन्दन ग्रन्थ, क्षेमचन्द 'सुमन', डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर अभिनन्दन समिति, दिल्ली, 2014, पृ.सं.58
6. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के साहित्य में सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना, डॉ.पंडित बन्ने, क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 15, कानपुर 2013, पृ.सं.86
7. केरल का स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य (डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के विशिष्ट संदर्भ में), डॉ.रेखा शर्मा, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली, 2004, पृ.सं.317
8. वही, पृ.सं.317

सहायक प्राध्यापिका एवं अध्यक्षा

के.एस.एम.डी.बी. कॉलेज, शास्तांकोट्टा, कोल्लम।

dhanyakrishnakumar2013@gmail.com

मानवता के पक्षधर कवि डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का चिरजीव महाकाव्य

डॉ. एलिसबत जोर्ज

शोध सारः केरल के लब्धप्रतिष्ठ हिंदी साहित्यकार पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का बहुचर्चित महाकाव्य है 'चिरजीव'। पुराणों में वर्णित सात महारथी चिरजीवों की जीवन गाथा को आधार बनाकर रचे गये इस महाकाव्य में सांस्कृतिक-मानवीय मूल्यों के आदर्श रूप को प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयास हुआ है।

बीज शब्द : अमरत्व, मानवता, भारतीय संस्कृति।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर भारतीय संस्कृति एवं मानवता के अनन्य पूजारी थे। 'सादा जीवन उच्च विचार' उनके जीवन का आदर्श रहा था। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न नायर जी ने काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध जैसे साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में लेखनी चलाई है। सन् 2008 में प्रकाशित 'चिरजीव' महाकाव्य केरलीय साहित्यकार द्वारा रचित एकमात्र हिंदी महाकाव्य है। रामायण, महाभारत तथा पुराणों में वर्णित चिरजीवों की कथा को महाकाव्य के अन्तर्गत समेटकर वर्तमान जीवन स्थितियों से उसे जोड़कर प्रस्तुत किया गया है।

शास्त्रानुसार महाकाव्य में धीरोदात्त गुणोंवाले एक नायक की कथा को सर्गों में प्रस्तुत किया जाता है। पर 'चिरजीव' महाकाव्य में एक नायक की जगह सात नायकों की कथा को सात अलग-अलग प्रकरणों में प्रस्तुत किया गया है। इन सातों महारथों की समानता या विशिष्टता है - उनकी चिरजीवता। अतः इन सातों प्रकरणों के मुख्य कथ्य के रूप में अमरत्व को लिया गया है। प्रत्येक प्रकरण के आरंभ में गणेश वन्दना, सरस्वती स्तुति आदि रखी गयी हैं। महाकाव्य के प्रारंभ में पूर्व पीठिका है, जिसमें कवि ने मानव समाज की चिरंतन समस्या पर विचार प्रकट किया है। युद्ध और अशांति महाभारत काल से विश्वव्यापी समस्या रही है। युद्ध से किसी प्रकार का लाभ नहीं मिलता। वे कहते हैं –

"कर चुके वे संग्राम अनेक
पर आदर्श नहीं था संग्राम का।"[1]

युद्ध में लाखों का प्राण नष्ट हो जाता है। बच्चे अनाथ हो जाते हैं, स्त्रियाँ विधवाएँ हो जाती हैं। गरीबी और यातना के अलावा कुछ नहीं प्राप्त होता।

'चिरजीव' महाकाव्य के बीजमंत्र में ही चिरजीवों का परिचय यों दिया गया है-

"अश्वत्थामा बलिर्व्यासो
हनुमांश्च विभीषणः
कृपः परशुरामश्च
सप्तैत चिरजीविनः"[2]

अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम -ये सात महापुरुष सदा काल जीवित हैं। प्रत्येक चिरजीव, मानव मन के भावों या चित्तवृत्तियों के रूप में इस कलियुग में भी विद्यमान हैं। अश्वत्थामा प्रतिकार या प्रतिहिंसा का, महाबलि त्याग और वचन-बद्धता का, हनुमान भक्ति और शक्ति का, विभीषण धर्मनिष्ठा का, व्यास सर्वज्ञता का, कृपाचार्य विवशता का और परशुराम प्रणपालन के प्रतीक बनकर आज भी सब कहीं उपस्थित हैं। यही उनके अमरत्व का निदान है।

द्रोणपुत्र अश्वत्थामा ही चिरजीवों में सबसे प्रचंड महारथी हैं। बदले की भावना में हिंसा मूर्ति बनकर पांडव कुल का सर्वनाश करना और बाद में शापग्रस्त होकर घृणित पात्र बन जानाअश्वत्थामा की कथा प्रस्तुत करते हुए नायर जी ने वर्तमान युग के विनाशकारी साधनों के प्रति मानवता को सचेत किया है। प्रतिशोध की मूर्ति बनकर अश्वत्थामा आज भी मानव की चित्तवृत्तियों में जीवित हैं और मानव वंश का सर्वनाश करने के मौके के इंतज़ार में हैं –

"मैं कलियुग का कवि मामूली
देखता हूँ इस युग में भी प्रणाली
बदला लेने की भावना में चिरलीन
मानव स्पन्दित है प्रति पल में।"[3]

कवि आधुनिक मानव में उस अश्वत्थामा को देखता है जिसके हाथ में ब्रह्मास्त्र के स्थान पर अणुबम है। मानवतावादी कवि व्याकुल हो उठते हैं–

"आज इस इलक्ट्रोनिक युग में
आट्टम का उपयोग आयुध में
कर लेना आत्मनाश का है कर्म
इसे बनने का संकल्प भी अधर्म है।"[4]

महाकाव्य के दूसरे प्रकरण में चिरजीव असुर राज महाबलि की कथा है। महाविष्णु ने वामन रूप धारण कर प्रजा हितैषी राजा बलि को पाताल में धँसा दिया। बलि चिरजीव और महान बन गया। नायर जी ने महाबलि को 'मानवता के संरक्षक' बताया है। तीसरा चिरजीव व्यास है। प्रपंच सत्य के जानकर एवं महाभारत के रचनाकार व्यास युग-युगों से सर्वज्ञानी के रूप में विद्यमान हैं। चौथा प्रकरण हनुमान की कथा बताता है, यह प्रकरण छह अध्यायों में बाँटा गया है।

श्रीराम भक्त हनुमान राम-रावण युद्धोपरांत राम का आशीर्वाद पाकर चिरजीव बन गया। रावण के भाई विभीषण ने भी राम के साथ धर्म परायण रहकर अमरत्व प्राप्त किया। आचार्य कृप अपने चंचल स्वभाव की विशेषता के कारण चिरजीवों में एक माने जाते हैं। अन्तर्द्वन्द्व और विवशता उनके चरित्र की खासियत है।

"वचन कर्म में रहा अन्तर कृप के
किया था वही, जो नहीं था धर्म
किया था वही जिसे माना कुकर्म
साक्षी नहीं था मन, तो क्या आश्चर्य।"[5]

महाभारत युद्ध में पाण्डव के पक्षधर होते हुए भी उन्हें कौरव सेना के संग रहना पडा। कृपाचार्य की यही विवशता वर्तमान कलियुग के मानव को भी अनुभव करना पड़ रहा है। धर्म-अधर्म को पहचानते हुए भी विवशता वश अधर्म का साथ देना आज के मानव की नियति है।

"मानव हम कलियुग के वर
देखते हैं स्वयं अपने में कृप को
साक्षी है हम तटस्थ अधर्म सम्मुख
आश्वास पाते हैं, 'क्या करे विवश'।"[6]

सातवाँ प्रकरण परशुराम पर केन्द्रित हैं। जो अपनी उग्र प्रतिज्ञा के कारण चिरजीव बने थे।

मानवता के पक्षधर डॉ.नायर जी चाहते हैं कि आधुनिक आविष्कारों का उपयोग केवल मानव कल्याण केलिए ही हो।

'बनावे आट्टम का साधन
जिससे होते मानव कल्याण
जिससे बने भव्य स्वर्ग संकल्प
रहे मानव जीवन शांत अहिंसामय
करे वे अणु का व्यास मंगलकारी।"[7]

निष्कर्ष : डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर मानवीय मूल्यों के पक्षधर कवि हैं। उनके साहित्य में लोक कल्याण की भावना मुखर उठती है। भारतीय संस्कृति के आधार -भूत तत्वों, त्याग और अहिंसा-के उच्च आदर्श को सातों चिरजीवों के जीवन संदर्भों में पुनःस्थापित करने का सफल प्रयास महाकाव्य में हुआ है।

नाटककार डॉ. एन चंद्रशेखरन नायर

डॉ. कमलानाथ एन.एम.

स्वर्गीय डॉ. एन.चंद्रशेखरन नायर जी केरलीय हिंदी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभासंपन्न प्रकाण्ड विद्वान हैं। उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को दृष्टि में रखकर डॉ. रामगोपाल सिंह चौहान'[1] ने कहा है कि 'उनके साहित्य के कथ्य का मूल स्वर है भारतीय संस्कृति, समाज और जीवन का ऐसा जीवंत मानवतावादी संदेश, जो आज की बदली हुई परिस्थितियों में ही नहीं, वरन हर काल के संक्रमणशील परिवेश में न केवल उन्नयन की प्रेरणा का आधार बनता है, अपितु जीवन और मानव मात्र के प्रति नवीन आस्था, विश्वास, निष्ठा और सौहार्द का संचार करता है।''[2] उनकी बहुमुखी प्रतिभा चित्रकला, कविता, महाकाव्य, निबंध, आलोचना, जीवनी, नाटक आदि विधाओं में बिखरी हुई नज़र आती है। डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर ने एक विशिष्ट सांस्कृतिक आयाम प्रदान करके अपने हिंदी नाटकों को महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान की है। उनके प्रकाशित नाटक हैं- 'कुरुक्षेत्र जागता है' (यह तीन लघु नाटकों 'द्विवेणी', 'बदला' और 'कुरुक्षेत्र जागता है' का संकलन है); 'सेवाश्रम' (1968); 'देवयानी' (1970); 'धर्म और अधर्म' (यह तीन लघु नाटकों 'सृष्टि का रहस्य', 'महाभारत का वीर पुरुष', 'धर्म और अधर्म' नाटकों का संकलन है)।

'द्विवेणी' भावात्मक-प्रतीकात्मक नाटक है। युग पुरुष ऋषि अहिंसामूलक आध्यात्मिकता का, शास्त्र पुरुष आधुनिक वैज्ञानिक चेतना का, पिशाच मनुष्य की दानवी प्रवृत्ति का तथा धर्मकन्या धर्म का प्रतीक हैं। विवेक और मन (शास्त्र पुरुष के भाई), अनुकम्पा, उदारता, सहिष्णुता, भक्ति (धर्मकन्या की माता) आदि मानवीय प्रवृत्तियों के संघर्ष भी चित्रित हैं, जैसे कि सत्य और असत्य, युद्ध और शांति तथा अहिंसा और हिंसा । शास्त्र पुरुष और धर्म कन्या का विवाह वैज्ञानिक

संदर्भ :

1. चिरजीव महाकाव्य, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, पृ.सं.8
2. वही, पृ.सं.7
3. वही, पृ.सं.29
4. वही, पृ.सं.28
5. वही, पृ.सं.186
6. वही, पृ.सं.186
7. वही, पृ.सं.28

सहायक ग्रंथ :

1. चिरजीव महाकाव्य, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, श्रीनिकेतन प्रकाशन, तिरुवनन्तपुरम, 2008.
2. केरल के हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ.पी.लता, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2016
3. केरल के हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, केरल हिंदी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम, 2005

असिस्टेंट प्रोफसर, राजकीय महिला महाविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम।

बुद्धि तथा भावात्मक हृदय की मानवीय चेतना का मिलन है। इस नाटक का उद्देश्य यों कह सकते हैं कि हिंसा, कलह, अविश्वास, अनास्था, युद्ध, विनाश से आतंकित दुनिया के ज़रिए मार्ग दिखाना है ।

'बदला' नाटक में इस मनोवैज्ञानिक सत्य का उद्घाटन हुआ है कि चाहे मनुष्य हो या दानव हो उसमें ईश्वर का निवास होता है। साथ ही नारी समस्या को भी उठाया गया है। नाटक में पात्र देवकीनाथ अपनी गाभिन पत्नी नीरादेवी को रेलगाड़ी से धकेलकर अपने दायित्व से मुक्त होना और नया जीवन शुरू करना चाहता है। इस घटना के पन्द्रह वर्षों बाद भयंकर ज्वर से पीड़ित देवकीनाथ को मूर्च्छित अवस्था में नीरादेवी सड़क से उठा ले जाती है और उसका उपचार करती है। रोगमुक्त देवकीनाथ समझ लेता है कि उपचार करनेवाली अपनी पत्नी नीरादेवी है, जिसे रेलगाड़ी से पन्द्रह वर्ष पहले धकेल दिया था। नीरादेवी की रक्षा संयोग से नरेंद्रनाथ द्वारा हुई। नीरा और उसका बेटा अब नरेंद्रनाथ की देखरेख में है। देवकीनाथ को अपने किए पर दुःख होता है, पर नीरादेवी देवकीनाथ को अपने पति के रूप में स्वीकारने तैयार नहीं होती ।

'कुरुक्षेत्र जागता है' (1962) करनाल के महाराज राजसिंह के दांपत्य जीवन से संबंधित एक कल्पित कथा है। राजसिंह अपनी पत्नी मायावती के चरित्र पर संदेह करते हैं। स्वतंत्रता- प्राप्ति के बाद देशी रियासतों का विलय हुआ तो करनाल के राजा इसपर क्षुब्ध रहे। अतः तत्कालीन शासन व्यवस्था से अतृप्त वे अपने मित्र तथा कुछ राजभक्तों के सहयोग से नई राजनीतिक दल बनाने की योजना बनाते हैं। उनके इस विकृत चरित्र के मूल में मानसिक बेचैनी हैं। किंतु अपनी पत्नी की चरित्र शुद्धि उसे चैन देती है। देशप्रेम की भावना से जाग उठकर वे कुरुक्षेत्र के प्रति गौरव का अनुभव करते हैं। लेकिन मायावती की मृत्यु उनके दिल को चोट पहुँचाती है, इससे वे सत्ता मोह छोड़कर सच्चे देशभक्त और जन-सेवक बन जाते हैं।

'युगसंगम' (1964) एक सामाजिक लघु नाटक है। इसमें नाटककार ने इस तथ्य पर ज़ोर दिया है कि गांधीजी ने आधुनिक युग में जिस अहिंसा तत्व को स्थान दिया है, उसकी जड़ें पिछले युगों में गड़ी हुई थी। गांधीजी अपनी प्रतिभा तथा कर्म से अपने युग के भाग्य-विधाता बने हैं, अतः गांधीजी को नाटककार अवतार पुरुष मानते हैं। यह सत्ययुग, रामायण युग और महाभारत युग आदि पौराणिक युगों की कथा है। इसमें नाटककार का उद्देश्य सत्य के महत्व का प्रतिपादन और कलियुग की विशेषता का चित्रण है, साथ ही भारतीय संस्कृति के आदर्श को पल्लवित-पुष्पित करना।

'सेवाश्रम' (1967) की भूमिका में नायर जी ने इसे 'कुरुक्षेत्र जागता है' का विकसित रूप कहा है। एक सामंती शासक का विदेशी सत्ता के साथ षड्यंत्र करके अपनी लुप्त सत्ता को पुनर्प्राप्त करना और भारतीय जनता के स्वाधीनता संग्राम के सुखद परिणाम को ध्वस्त करना आदि इस नाटक के विषय हैं। कितु रानी का देशप्रेम देश हित के मार्ग पर अग्रसर होने में उसे प्रेरित करता है। नाटक की कथावस्तु 'पताका' एवं 'प्रकरी' के जाल से मुक्त तथा सहज है।

'देवयानी' (1971) पौराणिक नाटक है। इसमें तीन अंक और चौदह दृश्य हैं। देवयानी कच से सच्चे दिल से प्रेम करती है। लेकिन अपने प्रेम के प्रति कच की उपेक्षा से दुःखी देवयानी उसे पठित विद्या के विस्मरण का शाप देती है। ययाति से देवयानी शादी करती है, किंतु सुरा के नशे में शुक्राचार्य के शाप के परिणामस्वरूप ययाति अकाल में वृद्ध होता है। शर्मिष्ठा से उत्पन्न अपने पुत्र पुरु से ययाति उसका यौवन कुछ दिनों केलिए दान में लेता है और फिर वापस देकर पुरु को राज्य का उत्तराधिकारी घोषित करता है। अपनी बेटी देवयानी को शुक्राचार्य पूर्व प्रेमी कच का वरण करने को प्रेरित करता है। किंतु देवयानी अपने वृद्ध पति के साथ रहना चाहती

है। शुक्राचार्य के आश्रम में देवयानी से भेंट हुए कच देवयानी की पतिनिष्ठा समझकर वरण करने को लाया पुष्पहार उसके पैरों पर अर्पित करके अपने प्रेम को सात्विक रूप देता है। तब वहाँ आए ययाति अपने प्रति देवयानी की पतिनिष्ठा समझकर उसका आलिंगन करता है। श्रेष्ठ भाषावैज्ञानिक भोलानाथ तिवारी इस नाटक में मिथक तत्व भी देखते हैं। उन्होंने यों लिखा है कि 'पौराणिक नाटकों में प्रायः अतिमानवीय (सूपर नेचुरल) बातें होती हैं, जिन्हें आज का बुद्धिप्रधान तथा तर्कप्रधान मानव स्वीकार नहीं कर सकता, किंतु मिथक के रूप में उन्हें स्वीकार किया जाता है। डॉ. नायर ने भी इस मिथकता का बहुत सर्जनात्मक और सफल प्रयोग किया है। इस दृष्टि से उनका 'देवयानी' नाटक विशेष रूप से उल्लेख्य है, जिसमें नाटककार भारतीय विवाह संस्था के प्रति आस्था जगाता है। ययाति और देवयानी का यह प्राचीन आख्यान इस रूप में आज केलिए प्रासंगिक भी बन गया है तथा आधुनिक भी ।"[3]

'धर्म और अधर्म' लघु नाटक संकलन में संकलित तीन नाटक हैं 'सृष्टि का रहस्य', 'महाभारत का वीरपुरुष' और 'धर्म और अधर्म' । सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर रचित इन नाटकों के द्वारा नाटककार ने पौराणिक आख्यानों के नए युग में नवीन उन्मेष के साथ सृष्टि की है। 'सृष्टि का रहस्य' में नाटककार ने ऋश्यशृंग की कथा को नवीन उद्‌भावना के साथ चित्रित किया है। 'महाभारत का वीरुपुरुष' पौराणिक कथा और कल्पना के सामंजस्य में रचा लघु नाटक है। इसमें कर्ण के उदार और महान व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही महाभारत युद्ध में भीष्म और कर्ण के बीच में होनेवाला मानसिक संघर्ष भी व्यक्त किया गया है। 'धर्म और अधर्म' नाटक के संबंध में स्वयं डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर का कहना है - "महाभारत की कथाएँ नित्य नवीन हैं। कभी पुरानी नहीं होतीं। यही नहीं, वे सब युगों केलिए प्रेरणास्त्रोत भी हैं ।... आधुनिक युग की अनंत समस्याओं को सुलझाते हुए हमें अपने उन पुण्य पुरुषों के कर्मों एवं कर्तव्यों पर विचार करना पड़ता है। मेरी इस रचना का लक्ष्य भई वही है, जिसके मूल में सत्य का अन्वेषण है। इसलिए मैंने महाभारत के प्रसिद्ध पात्रों के चरित्र को लेशमात्र भी बदलना नहीं चाहा। युधिष्ठिर और दुर्योधन के प्रति मेरे आकर्षण बिल्कुल तटस्त है। मेरा लक्ष्य दोनों का धर्म-संकल्प है। जैसा वर्णन महाभारत में है वैसा मेरी रचना में भई है। युधिष्ठिर और दुर्योधन दोनों धर्म के आश्रय में बोलते हैं। लेकिन विचारशील पाठक देख सकते हैं कि कौन धार्मिक है और कौन अधार्मिक। फिर भी दोनों के अपने विचारों से हमारी कुतूहलता बढ़ती है ।"[4]

संक्षेप में यों कह सकते हैं कि डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर के नाटकों में विषय-विविधता दिखाई देते हैं, जैसे कि पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, आधुनिक, मनोवैज्ञानिक, प्रतीकात्मक आदि। साथ ही उनके नाटक भारतीय आदर्शवादिता से ओतप्रोत हैं। जिसमें भारत के गौरवपूर्ण अतीत, उसके उदात्त मानवमूल्य भी दिखते हैं। उनके नाटकों का उद्देश्य मानव के शाश्वत मूल्यों की स्थापना है। कथावस्तु का चयन उद्देश्य की दृष्टि से किया गया है। कुछ नाटकों की कथावस्तु ऐतिहासिक है, कुछ की पौराणिक और कुछ की कल्पित है। संवाद चिंतन प्रधान है। उन्होंने अपने नाटक साहित्य को बिंबों और प्रतीकों में पिरोकर सजाया है। उसमें नाट्यभाषा के आदर्श प्रयोग भी मिलते हैं, साहित्यिक भाषा की सर्जनात्मकता की सृष्टि भी। यों कहना समीचीन होगा कि डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर ने अपने नाटक साहित्य के द्वारा केरल के ही नहीं पूरे दक्षिण भारत के हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाया है।

संदर्भ :

1. आगरा कॉलेज के हिंदी विभाग के प्राध्यापक रहे। वे एक अच्छे समीक्षक भी रहे ।
2. 'डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर अभिनंदन ग्रंथ'; सं-

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का आलोचना साहित्य

डॉ.एस.लीलाकुमारी अम्मा

सार

डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर बहुमुखी सृजनात्मक प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। वे सफल आलोचक भी हैं। उनके द्वारा लिखित आलोचना साहित्य की उपलब्धि अन्य उपलब्धियों से अधिक महत्वपूर्ण है।

बीज शब्द :

1. प्रतीक योजना, 2. युगीन प्रभाव, 3. तुलनात्मक अध्ययन, 4. विश्लेषणात्मक पर्यालोचना, 5. न्यायकारी समीक्षक, 6. सर्वेक्षणात्मक लेख, 7. विषय-वैविध्य।

विषय - प्रवेश

संसार में कुछ कर्मठ महापुरुष ऐसे होते हैं जो निरन्तर परिश्रम और प्रतिभा के बल पर अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए अग्रसर होते हैं। अपने अन्दर के आलोक से प्रकाशनमान ये अपने चारों ओर प्रकाश फैलाते हैं और भविष्य की पीढ़ी केलिए मार्गदर्शन करते हैं। डॉ.नायर जी ऐसे महापुरुष हैं जो राष्ट्रभाषा हिंदी की सेवा में अपना संपूर्ण जीवन व्यतीत किया है। वे एक कुशल साहित्यकार होने के साथ-साथ एक कुशल आलोचक भी हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो एक आलोचक के रूप में डॉ.नायर जी में सहृदयता, प्रतिभा, अंतर्दृष्टि, विदित ज्ञान, निष्पक्षता और निर्वैयक्तिकता का सुन्दर समन्वय है। अतः आलोचना जगत में एक न्यायकारी आलोचक के रूप में डॉ.नायर जी की एक स्वतंत्र जगह भी बनती है।

डॉ.नायर जी द्वारा विरचित आलोचनात्मक रचनाएँ:

1. प्रतीक : पूर्वी और पश्चिमी, 2. प्रतीकी कवि सुमित्रानन्दन पंत, 3. हिंदी और मलयालम के दो सिम्बोलिक कवि, 4. श्रेष्ठ सिंबोलिक कवि जी.शंकर कुरुप, 5. प्रतीकी कवि सुमित्रानन्दन पंत और

क्षेमचंद्र 'सुमन'; प्रकाशक डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर अभिनंदन समिति, दिल्ली-32; पृ.सं-83.

3. 'डॉ.एन. चंद्रशेखरन नायर का नाटक साहित्य'; डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर; पृ.सं-20.
4. 'धर्म और अधर्म'; डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर; प्राक्कथन में ।

ग्रन्थ-सूची :

1. 'डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर का नाटक साहित्य'; डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर; श्रीनिकेतन प्रकाशन, केरल, तिरुवनन्तपुरम; प्रथम संस्करण; 1982.
2. 'केरल के हिंदी साहित्य का इतिहास'; डॉ. पी. लता; लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद; 2016.
3. 'केरल हिंदी साहित्य का बृहद इतिहास'; डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर; श्रीनिकेतन प्रकाशन, केरल, तिरुवनन्तपुरम; 1989.
4. 'डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर अभिनन्दन ग्रंथ'; सं-क्षेमचंद्र 'सुमन'; डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर अभिनन्दन समिति, दिल्ली; दूसरा संस्करण-2014.

एच.एस.एस.डी. (जूनियर) हिन्दी
जी.एच.एस.एस. आयापरम्पु, आलप्पुषा

जी.शंकरकुरुप, 6. डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर का नाटक साहित्य, 7. समकालीन भारतीय नाट्य साहित्य।

प्रतीक : पूर्वी और पश्चिमी

डॉ.नायर जी का पहला आलोचनात्मक ग्रंथ है 'प्रतीकः पूर्वी और पश्चिमी'। इसमें उन्होंने हिन्दी के श्रेष्ठ कवि सुमित्रानन्दन पंत और मलयालम के कवि जी. शंकरकुरुप दोनों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इनके पहले दो अध्याय में प्रतीक : पूर्वी तथा पश्चिमी का प्रतिपादन आता है। प्रथम प्रकरण में प्रतीक विधान का शास्त्रीय एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन है। प्रतीकों के बारे में निम्नलिखित पहलुओं पर विवेचन की गयी है - प्रतीक का क्षेत्र - विस्तार, प्रतीक भारतीय दर्शनों एवं अध्यात्म में, प्रतीक परंपरागत और नवीन, प्रतीक : रूपक - उपमा और सादृश्य, प्रतीक : वक्रोक्ति - समासोक्ति, अन्योक्ति, रूपकातिशयोक्ति और दृष्टान्त, प्रतीक : मिथक और सन्दर्भ प्रतीक और बिम्ब, प्रतीकों का भेद निरूपण। दूसरा प्रकरण प्रतीकवाद - भारतीय और पश्चिमी सिद्धांतों पर है। इसमें प्रतीकवाद और रहस्यवाद, प्रतीकवाद और छायावाद, प्रतीकवाद और उपनिषद और फ्रांसीसी प्रतीकवाद आदि विषय प्रतिपादित है। श्री.सुमित्रानन्दन पंत की भूमिका इसमें दी गयी है। उन्होंने लिखा है कि 'इस ग्रंथ में अपने विषय के सभी पहलुओं का गंभीर एवं व्यापक अध्ययन मिलता है।[1]

प्रतीकी कवि सुमित्रानंदन पंत

प्रतीकी कवि सुमित्रानन्दन पंत डॉ.नायर जी का दूसरा आलोचनात्मक ग्रंथ है। इसमें सुमित्रानन्दन पंत के व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पहलुओं पर विश्लेषणात्मक आलोचना है। इसमें तीन अध्याय हैं - सुमित्रानन्दन पंत : कवि व्यक्तित्व, सुमित्रानंदन पंत : भारतीय चिंतन और दर्शन, सुमित्रानन्दन पंत : प्रतीक योजना। प्रथम अध्याय में कवि - व्यक्तित्व के पूर्व - जीवन परिचय प्रस्तुत किया गया है। मार्क्सवाद और युगीन प्रभाव को दर्शाया गया है। छायावादी और समन्वयवादी कवि के रूप में उनकी आलोचना भी इस प्रकरण में है। दूसरे प्रकरण में भारतीय चिन्तन का कवि पर प्रभाव, युगांतोत्तर काव्य में भारतीय चिंतन, प्रतीकवादी कवि पंत के काव्यों में मानववाद और उनका विकास आदि पहलुओं पर आलोचना है। तीसरे प्रकरण में सुमित्रानंदन पंत की प्रतीक योजना के विभिन्न पहलुओं पर विवेचन है। विषय इस प्रकार हैं - छायावादी काव्य प्रतीक, समन्वयवादी, दार्शनिक, प्रकृतिपरक और सांस्कृतिक प्रतीक। उनके रूपकों में जो प्रतीक योजना है, उसकी भी यहाँ चर्चा है।

हिंदी और मलयालम के दो सिम्बोलिक कवि :

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का शोध ग्रंथ है 'हिंदी और मलयालम के दो सिम्बोलिक कवि'। इसको बिहार विश्वविद्यालय से पीएच.डी उपाधि प्राप्त हुई है। शोध निदेशक है डॉ.श्यामनन्दन किशोर। प्रतीक योजना के परिप्रेक्ष्य में "दक्षिण और उत्तर के दो महाकवियों के जीवन एवं कृतित्व पर रचित यह ग्रंथ सांस्कृतिक एवं भावात्मक एकता की दृष्टि से एक उदात्त प्रयत्न है।"[2]

डॉ.श्यामनन्दन किशोर ने ग्रंथ का परिचय देते हुए इस प्रकार लिखा है - "540 पृष्ठों के इस परिश्रमपूर्वक लिखे गए शोध-प्रबन्ध के सातों अध्याय और छहों परिशिष्ट विशेष महत्वपूर्ण है।"[3] शोधार्थी ने प्रथम अध्याय में प्रतीक विधान की सामान्य विशेषताओं का उल्लेख किया है तथा उसके दूसरे खंड में उसने पौरस्त्य एवं पाश्चात्य दृष्टियों से उसका तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ अध्यायों में हिंदी के प्रतीकवादी कवि सुमित्रानन्दन पंत के कवि व्यक्तित्व, उनके चिन्तन और दर्शन तथा उनकी प्रतीक योजनाओं पर गंभीर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। पंचम और षष्ट अध्यायों में महाकवि जी.शंकरकुरुप के कृतित्व,

व्यक्तित्व एवं उनकी प्रतीक-योजना का सारगर्भित विवेचन किया गया है। सप्तम-अध्याय के अन्तर्गत सुमित्रानन्दन पंत और शंकर कुरुप दोनों के तुलनात्मक बिन्दुओं का समाहार प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः इसे शोध प्रबन्ध का उपसंहार कहा जाएगा। सतसठ पृष्ठों के इस महत्वपूर्ण अध्याय में अनेक नवीन शोध बिन्दुओं का उद्‌घाटन किया गया है। भविष्य में शोधकर्ताओं के सामग्री-संकलन की दृष्टि से छहों परिशिष्ट विशेष महत्वपूर्ण है।

सुमित्रानन्दन पंत ने ग्रंथ के आमुख में लिखा है -"इस ग्रंथ में अपने विषय के सभी पहलुओं का गंभीर अध्ययन मिलता है। अनेक वर्षों से लेखक अपने विषय का अध्ययन करता आया है। वस्तुतः एक दाक्षिणात्य विद्‌वान के द्‌वारा यह ग्रंथ हिंदी साहित्य की नहीं, अपितु समस्त भारतीय साहित्य केलिए एक विशिष्ट देन है।"[4]

श्रेष्ठ सिम्बोलिक कवि जी.शंकर कुरुप

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के शोध-ग्रंथ का एक मुख्य अंश है प्रस्तुत ग्रंथ। इसमें मलयालम के महाकवि एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त जी.शंकरकुरुप की जीवनी एवं प्रतीकी कविताओं का गहरा अध्ययन प्रस्तुत किया है। प्रतीकी कला के कुरुप जैसे सफल प्रयोक्ता भारतीय काव्य-क्षेत्र में विरले ही मिलते हैं। वह पूर्वी तथा पश्चिमी प्रतीक एवं प्रतीक - क्रिया के अच्छे जानकर थे। वह भारतीय वाङमय, उपनिषदों के भी सच्चे जानकार रहे थे। कुरुप की प्रतीक-क्रिया में देशीय एवं सांस्कृतिक प्रतीकों का बाहुल्य है। शंकरकुरुप प्रतिभावान कवि थे। उनके काव्यों में उनके निजी प्रतीक भी प्रभूत मात्रा में आये। इन विविध परिप्रेक्ष्यों में महाकवि कुरुप की विश्लेषणात्मक पर्यालोचना करना इस ग्रंथ का विषय है।

डॉ.वेल्लायणि अर्जुनन ने लिखा है कि प्रस्तुत ग्रंथ लेखक का एक गंभीर शोध-ग्रंथ है। उन्होंने महाकवि शंकरकुरुप की कवि प्रतिभा के संपूर्ण सौन्दर्य, गंभीरता और गहराई को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। साथ ही महाकवि की प्रतीकात्मक कविताओं के विशाल साम्राज्य की विशिष्टता तथा विविधता को खोलकर रखा है। यह ग्रंथ दो अध्यायों में विभक्त है। प्रथम में जी.शंकरकुरुप के यशस्वी जीवन का विविध परिवेशों में विवेचन किया गया है। और साथ ही इसी अध्याय में निम्न प्रकरण भी मिलते हैं - जी.शंकरकुरुप : प्रकृति और पुरुष, जी.शंकरकुरुप भारतीय चिन्तन और दर्शन, जी.समन्वय के कवि, जी.देशप्रेम, राष्ट्रीय भावना तथा गांधीदर्शन। द्वितीय अध्याय में जी.शंकरकुरुप की प्रतीक योजना पर विशद एवं विदग्ध पठन है। प्रकृतिपरक प्रतीक, सांस्कृतिक प्रतीक, दार्शनिक प्रतीक, व्यक्तिगत प्रतीक-इन पहलुओं के परिप्रेक्ष्य में चर्चा की गयी है। कुल मिलाकर हिन्दी पाठकों के लिए एक प्रशस्त दक्षिणी महाकवि का सुरुचिपूर्ण पठन इस ग्रंथ के द्‌वारा हुआ है।

प्रतीकी कवि सुमित्रानन्दन पंत और जी. शंकरकुरुप

डॉ. नायर जी के शोध-ग्रंथ का अन्तिम अंक है प्रस्तुत ग्रंथ का प्रतिपाद्य। पंत और जी. शंकरकुरुप के जीवन और कृतित्व पर इस ग्रंथ में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। विजयेन्द्र ने कहा है कि भारत की दो महान भाषाओं के दो समकालीन महाकवियों के अभिव्यंजना पक्ष के एक अध्ययन-प्रतीक विधान का वह तुलनात्मक विवेचन-विश्लेषण भारतीय भाषाओं के मध्य भाषिक सेतुबन्धन है। इस श्रेष्ठ अनुसन्धान के लिए डॉ. नायर हिन्दी और मलयालम भाषियों के पाठकों के धन्यवाद और साधुवाद के पात्र है।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का नाटक साहित्य

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के नाटकों का संकलन है प्रस्तुत रचना। आपकी नाट्य रचनाओं के अलग-अलग प्रकाशन हो चुके हैं और हिन्दी जगत में उनकी चर्चाएँ भी हो चुकी है। इस ग्रंथ की पच्चीस

पृष्ठोंवाली भूमिका तैयार की है। इस ग्रंथ के दूसरे खंड में डॉ.नायर की नाट्य रचनाओं पर हिन्दी के मूर्धन्य आलोचकों द्वारा लिखे गए पच्चीस आलोचनात्मक लेख प्रकाशित हुए हैं। उन लेखकों के नाम हैं - डॉ.विजयेंद्र स्नातक, डॉ.रामगोपाल सिंह चौहान, डॉ.नत्थनसिंह, पी.नारायण, डॉ.महेन्द्र भटनागर, डॉ.गिरिराज शरण अग्रवाल, डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लै, डॉ.अवधेश अरुण, डॉ.इन्द्रसेंगर, डॉ.पी.के.नारायण पिल्लै, डॉ.के.भास्करन नायर, महाकवि एम.पी.अप्पन, पी.टी.भास्कर पणिक्कर, डॉ.शूरनाट कुंजनपिल्लै, प्रो.सुकुमार अष़िक्कोडु, प्रो.मेलेत्तु चन्द्रशेखरन, प्रो.देवेन्द्रनाथ शर्मा, प्रो.आर.जनार्द्दनन पिल्लै, प्रो.एन.कृष्णपिल्लै, एम.एस.विश्वंभरन, डॉ.एन.ए.करीम, डॉ.यज्ञप्रसाद तिवारी, डॉ.धर्मवीर, श्री.विष्णुप्रभाकर और डॉ.रामस्वरूप आर्य। इन लेखकों ने डॉ.नायर के नाटकों पर संपूर्ण दृष्टि से आलोचना प्रस्तुत की है। कुछ उल्लेखनीय विषय निम्न प्रकार हैं - चन्द्रशेखरन नायर के नाटकों में प्रतीक योजना, हिन्दी के सशक्त नाटककार नायर, नायर के नाटकों में मानवता पक्ष, नायर के नाटकों में पौराणिक आख्यान, नायर के नाटकों में आदर्शपरता, देवयानी में प्रेम की परिकल्पना, हिन्दी नाटक साहित्य के इतिहास में नायर का स्थान, नायर के नाटकों में संस्कृति के सूक्ष्म प्रतिमान, सर्वोदय-दर्शन, लोकमंगल की भावना, जीवन दर्शन, रंगमंचीयता, युगबोध आदि।

समकालीन भारतीय नाट्य साहित्य :

डॉ.चन्द्रशेखरन नायर की षष्टिपूर्ति के सन्दर्भ में उनके सारस्वत समादार के उपलक्ष्य में निर्मित एक बृहद्ग्रंथ है। इस ग्रंथ में डॉ.नायर के जीवन एवं कृतित्व के अध्ययन के साथ ही समकालीन भारतीय नाट्य साहित्य का इतिहास भी संकलित किया गया है। प्रत्येक भारतीय भाषा के नाट्य-साहित्य के विकास एवं इतिहास का आधिकारिक सर्वेक्षणात्मक लेख इसमें समाहित है। इसके अलावा "डॉ.नायर की संपूर्ण नाट्य रचनाओं पर देश के अनेक विद्वानों द्वारा समीक्षा भी प्रस्तुत है। सारे दक्षिण में इस प्रकार का एक सन्दर्भ-ग्रंथ यही अकेला है।"[5] यह एक सुरुचिपूर्ण प्रकाशन भी है। इसमें कुल मिलाकर सत्तर विद्वानों के लेख आये हैं। इनमें प्रमुख हैं - महेन्द्र भटनागर, डॉ.गिरिराज शरण अग्रवाल, डॉ.अवधेश्वर, प्रो.देवेन्द्रनाथ शर्मा, डॉ.विश्वनाथ अय्यर, डॉ.स्वातिराय चौधरी, श्री.श्रीनिवास, डॉ.तंकमणि अम्मा, डॉ.धर्मवीर, डॉ.करीम, भोलानाथ तिवारी, डॉ.विष्णुदत्त, डॉ.वेल्लायणि अर्जुनन, डॉ.कुट्टनपिल्लै, डॉ.भीमसेन निर्मल, डॉ.मुरारीलाल, डॉ.वीरेन्द्रशर्मा, इन्द्रसेंगर, श्री.पी.नारायण, टी.एस. पोन्नम्मा, टी.पी.शंकरन कुट्टी नायर आदि।

इनके अलावा अनेक भारतीय भाषाओं के विद्वानों ने भी अपने लेखों द्वारा समर्थन किया है। इसमें नायर के बहुमुखी व्यक्तित्व को दर्शानेवाले दो दर्जन चित्र भी प्रकाशित हैं। भारत के राष्ट्रपति से लेकर आदरणीय व्यक्तियों का सन्देश भी प्रस्तुत संग्रह भी शोभा बढ़ाती है।

इस ग्रंथ का समर्पण पूर्व माननीय मानव संसाधन मंत्री श्री.पी.वी.नरसिंहराव ने तिरुवनन्तपुरम में किया था, जिसकी अध्यक्षता माननीय पूर्व प्रधान मंत्री श्री.करुणाकरन ने ग्रहण की।

निष्कर्ष

डॉ.नायर जी के आलोचना साहित्य के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि इस विधा में उनके द्वारा जितना प्रयास हुआ है, वह महत्वपूर्ण है। विषय-वैविध्य लेखक की अभिरुचि की व्यापकता को दर्शाता है। नया दृष्टिकोण है। समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारियों को भी समझने में हमें मदद मिलती है। इनमें सभी ग्रंथ अपने प्रतिपाद्य और शैली की दृष्टि से एवं प्रामाणिकता की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। अतः आलोचना जगत में एक न्यायकारी समीक्षक के रूप में डॉ.नायर की एक स्वतंत्र जगह भी बनती है। उनके

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर : व्यक्तित्व और कृतित्व

डॉ. लक्ष्मी एस.एस.

सार:

केरल के प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। आप हिंदी एवं मलयालम कवि, नाटककार, कथाकार, जीवनीकार, आलोचक, आत्मकथाकार आदि हैं। आप भारतीय संस्कृति के प्रबल पोषक भी हैं। डॉ. नायरजी केरल के विविध सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संगठनों से जुड़े थे। आपने काव्य नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, समालोचना, जीवनी, अनुवाद आदि साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में लेखनी चलाई है। सत्य, न्याय, अहिंसा, मानव-प्रेम आदि गुण उनकी रचनाओं में दिखाई देते हैं। तिरुवनन्तपुरम में स्थित 'केरल हिंदी साहित्य अकादमी' डॉ. नायर जी के अथक प्रयासों का ही फल है। उन्हें केन्द्रीय सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, शिक्षा-संस्थानों, साहित्य अकादमियों और स्वैच्छिक हिन्दी सेवी संस्थाओं से ढेरों पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। सन् 2020 में नायर जी पद्मश्री पुरस्कार से भी सम्मानित हुए हैं।

बीज शब्दः परिवार, प्रारंभिक शिक्षा, स्वतंत्रता-आन्दोलन, रचनाएँ, केरल हिंदी साहित्य अकादमी, सम्मान एवं पुरस्कार।

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर सचेतन और विचारशील रचनाकार थे। उनका जन्म केरल के शास्ताम कोट्टा नामक गाँव में 29 दिसम्बर 1923 को हुआ था, लेकिन बालक चन्द्रशेखरन को, जब पढ़ने के लिए पाठशाला में प्रवेश दिलाया गया तब जन्म तिथि 27 जून 1924 लिखी गई थी। उनके पिता श्री नीलकंठ पिल्लै ग्राम के एक प्रतिष्ठित तथा निष्ठावान व्यक्ति थे। उनकी माता श्रीमती जानकी अम्मा एक कुलीन धार्मिक थीं। माता की धार्मिक भावना का प्रभाव उन्हें था।

डॉ. नायर जी की प्रारंभिक शिक्षा का केन्द्र दो कक्षोंवाली एक पाठशाला था, आगे की शिक्षा, उन्होंने शास्तामकोट्टा की वर्णाक्युलर वाली पाठशाला में प्राप्त की, आगे जितनी भी परीक्षाएँ उन्होंने उत्तीर्ण कीं, वह व्यक्तिगत रूप में ही की है। विद्यालय के फीस केलिए नायरजी को अत्याधिक प्रयत्न करना पड़ता था, इसी कारण नायर जी आठवें दर्जे में

आलोचनात्मक कार्यों की गहराई और विचारशीलता हमें प्रेरित करती है कि हम साहित्य को एक नए दृष्टिकोण से देखें और उनके महत्व को समझें।

संदर्भ ग्रंथ :

1. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, प्रतीक : पूर्वी तथा पश्चिमी, पृ.244
2. अक्षरा-सितंबर अंक, 2000, पृ.17
3. डॉ.वेल्लायणि अर्जुनन, श्रेष्ठ सिंबोलिक कवि जी.शंकरकुरुप, पृ.249
4. विजयेन्द्र स्नातक, प्रतीकी कवि सुमित्रानंदन पंत और जी.शंकर कुरुप, पृ.248
5. विजयेन्द्र स्नातक - समकालीन भारतीय नाट्य साहित्य, पृ.251

पूर्व अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, एस.एन.कॉलेज, कोल्लम।

नहीं पढ़ सके। पाठशाला अवश्य छूट गयी थी, परन्तु पाठन क्रिया सुचारू रूप से चल रही थी।

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के नेताओं के भाषणों से प्रभावित होकर नायर जी हिंदी भाषा की ओर आकर्षित हुए, हिंदी की दो प्रारम्भिक परीक्षाएँ प्राथमिक और मध्यमा पास करके आसपास के वाचनालयों - और अन्य केन्द्रों में अपने हिंदी ज्ञान से नायरजी समस्त जनों को लाभान्वित करने लगे, जिससे बहुत से अध्यापक एवं अध्यापिकाएँ उनके शिष्य बन गयीं। इसके साथ ही वे मद्रास की दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की उच्च परीक्षाओं के लिए भी अध्ययन करते रहे। सन् 1948 में वे मद्रास हिंदी प्रचार सभा की विशारद परीक्षा उत्तीर्ण हुए। सन् 1949 में सभा के प्रमाणित हिन्दी प्रचारक नियुक्त हुए। उसी साल पुनलूर अंग्रेज़ी हाईस्कूल में हिंदी पंडित नियुक्त हुए। वहीं अध्यापन करते हुए सन् 1950 में व्यक्तिगत रूप से मद्रास मैट्रिक्यूलेशन परीक्षा पास कर ली। आगे पढ़ने और विश्वविद्यालय में नौकरी पाने की इच्छा से प्रेरित होकर पुनलूर हाईस्कूल की नौकरी से त्यागपत्र देकर तिरुवनन्तपुरम में शास्तमंगलम वाले राजा केशवदास नायर सर्विस सोसाइटी हाईस्कूल में हिंदी पंडित का काम स्वीकार किया। उसी वर्ष ट्रावनकोर विश्वविद्यालय की हिंदी विद्वान परीक्षा में उच्च विजय प्राप्त कर ली। अध्ययन की लगन तीव्र गति से नायर जी को प्रोत्साहित करती रही और सन् 1955 में व्यक्तिगत तौर पर स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1957 में प्रयाग हिंदी विश्वविद्यालय की साहित्य रत्न परीक्षा में उत्तीर्ण होकर सन् 1958 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर किया और उसी वर्ष पदोन्नति प्राप्त कर महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय में प्राध्यापक बन गये। सन् 1959 से 60 तक चङ्ङनाश्शेरी एन.एस.एस. कॉलेज में कार्य करते रहे और वहाँ से एन.एस.एस के विविध कॉलेजों में स्थानान्तरित किये गये। सन् 1968 में नायर जी को प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पद पर पदोन्नति मिली। ओट्टप्पालम की हिंदी पाठपुस्तक समिति के चेयनमैन के पद पर भी मनोनीत किये गये। साथ ही पी.जी. बोर्ड के सदस्य, भाषा संकाय के सदस्य, परीक्षा-परिष्करण समिति की कार्यकारिणी समिति के सदस्य और अनेक अनुषंगिक पदों पर भी नायर जी की नियुक्ति हुई।

सन् 1975 में नायर जी पुनः महात्मा गाँधी कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम आये। बिहार विश्वविद्यालय में पंजीकृत विषय 'हिंदी और मलयालम के दो सिम्बोलिक कवि शोध विषय पर शोध कार्य भी किया और सन् 1977 मई में बिहार विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर ली। सुमित्रानन्दन पन्त और जी. शंकरकुरुप दोनों की काव्य रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन उनके शोध रूप में साहित्य व समाज के समक्ष प्रस्तुत हुआ। सन् 1967 से नायर जी प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष रहे। सन् 1975 से प्रथम श्रेणी के प्रोफेसर नियुक्त रहे और उसी पद से 27 जून 1984 में कार्य-निवृत्त हुए। इसके बाद तीन वर्ष तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मेजर रिसर्च फेलो और सन् 1984 से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के ऐमिरिटस प्रोफसर रहे। केरल विश्वविद्यालय, महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय और कालिकट विश्वविद्यालय की अनेक समितियों एवं पाठ्यक्रम समितियों में सक्रिय योगदान भी दिए थे।

उनका परिवार मध्यमवर्गीय है। उनकी पत्नी रहीं स्वर्गीय शारदा (प्रसिद्ध वाग्मी एम.पी. मन्मथन की सुपुत्री), पुत्र शरतचन्द्रन (दिवंगत), दो पुत्रियाँ एस नीरजा और एस. सुनंदा हैं।

डॉ. नायर का लेखन-कार्य सन् 1950 से तथा कृतियों का प्रकाशन सन् 1953 से प्रारंभ होता है। उनकी प्रारंभिक रचनाएँ नाटकों के रूप में साहित्य व समाज के सम्मुख आईं। बाद में डॉ. नायर जी का

कविता, कहानी, निबन्ध, उपन्यास, आलोचना, समीक्षा, जीवनी आदि क्षेत्रों में भी पदार्पण हुआ। आप सफल अनुवादक और सफल सम्पादक भी थे।

डॉ. नायर जी एक सफल साहित्यकार के साथ-साथ कला के कुशल चितेरे भी रहे। उनके भावों की अभिव्यक्ति कभी शब्दों के माध्यम से हुई है तो कभी तूलिका ने उनके भावों को विविध रूप में उकेरा है। अपनी नैसर्गिक प्रतिभा के कारण ही डॉ. नायर जी का कला के प्रति रुझान बढ़ा और उन्होंने मद्रास सरकार की चित्रकला परीक्षा उत्तीर्ण की, तदुपरान्त अनेक तेलचित्र और जलरंग चित्र भी निर्मित हुए। प्रकृति और पुरुष, भगवान बुद्ध पार्थ तमसो मा ज्योतिर्गमय, राम और सीता, कंस विग्रह, विल्लेज के ऊपर बादल, केरल देवी, स्वामी विवेकानन्द, बिनोवा भावे आदि इसमें शामिल हैं। वे प्रारंभ से ही गाँधी, बिनोबा के अनुयायी रहे हैं, अतः अहिंसा, सादा जीवन तथा उच्च विचार उनके व्यक्तित्व के मूल तत्व हैं। भारतीय संस्कृति के उदात्त मूल्यों में उनकी अगाध आस्था है पर वह न तो परम्परावादी हैं और न ही आडम्बर प्रियता के शिकार। डॉ. एन.पी. कुट्टन पिल्लै जी ने लिखा है - प्रोफेसर नायर मानव-मूल्यों के पारखी हैं और चाहते हैं कि मानव विशिष्ट मानवीय गुणों से परिचालित हो। वे मानव में देवत्व के दर्शन करना चाहते है।"[1] (पृ 102, डॉ. रेखा शर्मा, केरल का स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी साहित्य।)

डॉ. नायर जी के कार्यक्षेत्र भाषा और अध्ययन के साथ समाज, संस्कृति और आध्यात्म भी हैं। वे देश भर के अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं के सदस्य, अध्यक्ष, तथा संचालक भी हैं। सन् 1967 से 1973 तक पालघाट जिले में 'भारत युवक समाज' के अध्यक्ष, सन् 1970 से 1971 तक गाँधी शताब्दी समिति, ओट्टपालम के अध्यक्ष और पालघाट जिले के उपाध्यक्ष, सन् 1971 से 1975 तक पालघाट जिले में 'सर्वोदय मण्डल' के अध्यक्ष रहे। सन् 1975 से 1978 तक मद्रास के केन्द्र सरकार के रेल मन्त्रालय द्वारा मनोनीत सदस्य रहे। सन् 1979 से भारत सरकार के शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा स्वतन्त्र हिंदी संस्थाओं के कार्य-निरीक्षण के लिए मनोनीत सदस्य भी थे। विश्व विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा नेशनल पाठ्यक्रम समिति में मनोनीत सदस्य, केरल हिंदी साहित्य अकादमी के स्थायी चेयरमेन एवं केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका के संस्थापक सम्पादक भी थे।

'केरल हिंदी साहित्य अकादमी' स्थापना सन् 1950 में तिरुवनन्तपुरम में हुई थी। इसका पंजीकरण 16 जून 1982 में हुआ था। अकादमी के प्रमुख उद्देश्य भाषाई एवं सांस्कृतिक एकता को बनाये रखने योग्य पुस्तकों की रचना एवं प्रकाशन, हिंदीतर प्रदेशों में रचे गए हिंदी ग्रन्थों की प्रदर्शनियों का आयोजन, दक्षिण के हिंदी साहित्यकारों को उनकी योग्यता के अनुसार प्रोत्साहन एवं पुरस्कार देना और उनका आदर - सम्मान करना, अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी साहित्य की गतिविधि एवं प्रगति पर चर्चाओं का समायोजन आदि हैं।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी ने प्रतिवर्ष दक्षिण के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकारों को उनकी कृतियों के आधार पर पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र दिये हैं।

डॉ. नायरजी को और उनकी रचनाओं को केन्द्रीय सरकार के विभिन्न मंत्रालयों शिक्षा संस्थानों, साहित्य अकादमियों और स्वैच्छिक संस्थाओं से ढेरों पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। जैसे -

क) अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन, बम्बई द्वारा सन् 1968 में 'मास्टर आफ एजूकेशन' की मानद उपाधि।

ख) भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा सन् 1972 में 'देवयानी नाटक', सन् 1974 में

'प्रोफेसर और रसोइया कहानी', सन् 1982 में 'गौरीशंकर' रचनाएँ पुरस्कृत।

ग) सन् 1947 से 1972 तक की रचनाओं में सर्वोत्तम होने के उपलक्षय में 'कुरुक्षेत्र जागता है' कृति को हैदराबाद हिंदी प्रतिष्ठान का सन् 1972 में पुरस्कार प्राप्त हुआ।

घ) सन् 1983 में तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित, समग्र लेखन सम्मान (1988), रूपाम्बरा सम्मान (1966), विश्वकोश सम्मान (1997), विवेकानन्द सम्मान (1999), प्रेमचन्द लेखक पुरस्कार (1999), साहित्य सारस्वत सम्मान (1999), कर्मयोगी सम्मान (2000), साहित्य श्री सम्मान (2000), साहित्य शिरोमणी पुरस्कार (2001), गुरुपूजा पुरस्कार (2002), गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान (2005), विद्याधिराजा श्रेष्ठ पुरस्कार (2005), विशिष्ट संस्कृति सम्मान (2006), आदि भी प्राप्त हुए।

डॉ. नायर जी विचारशील नाटककार थे। सन् 1972 में तीन नाटकों का संकलन - द्विवेणी, बदला, कुरुक्षेत्र -जागता है प्रकाशित हुआ। प्रथम नाटक 'द्विवेणी' प्रतीकात्मक नाटक है। 'बदला' नाटक में सामाजिक पृष्ठभूमि में नारी जीवन की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। 'कुरुक्षेत्र जागता है' लघु नाटक है।

सन् 1964 में राजपाल एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित 'हार की जीत' कहानी संग्रह में आठ कहानी संकलित हैं। 'प्रोफेसर और रसोइया' में ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं।

सन् 1965 में प्रकाशित आपका खण्ड काव्य है 'हिमायल गरज रहा है'। सन् 1998 में डॉ. नायर जी का नवीन काव्य 'निषाद शंका' के नाम से प्रकाशित हुआ।

नायर जी ने जीवनी विधा में दो रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। इनमें 'महर्षि विद्याधिराज तीर्थपाद' उसकी स्वतन्त्र रचना है तथा 'अतीत के दिन' अनूदित हैं।

सन् 1996 में प्रकाशित 'निबन्ध मंजूषा' में बीस निबन्ध संकलित हैं। वस्तुतः "इस संकलन को डॉ. नायर जी के साहित्यिक निबन्ध लेखक क्रम में परिगणित नहीं किया जाना चाहिए। यद्यपि केरल में हिंदी के प्रसार प्रचार एवं छात्रों के प्रति जागृत करने की दिशा में उसका प्रभूत महत्व है।"[2] (पृ 112, डॉ. रेखा शर्मा, केरल का स्वातन्त्रयोत्तर हिंदी साहित्य।)

उनके समीक्षात्मक ग्रन्थ सन् 1978 में प्रकाशित 'प्रतीकः पूर्वी और पश्चिमी' में भारतीय और पाश्चात्य साहित्य परम्परा में प्रतीक के स्वरूप सम्बन्धी मान्यताओं विविध काव्यालंकारों, मिथकों, विम्बों-प्रतीकों आदि पर विचार किया गया है।

सन् 1979 में प्रकाशित शोध ग्रन्थ 'प्रतीकी कवि सुमित्रानन्दन पन्त' में स्वतन्त्र रूप से हिंदी के प्रख्यात छायावादी कवि के काव्य में प्रतीक योजना के स्वरूप का विवेचन है।

मूलरूप से मलयालय में रचित तथा हिंदी में अनूदित सीतम्मा उपन्यास (1993) डा. नायर का उपन्यास है। इसकी नायिका सीता आदर्श केरलीय नारी है।

डॉ. नायर जी एक कुशल अनुवादक भी हैं। मलयालम के प्रथम गीतकार के रूप में स्मरणीय महाकवि एम.पी. अप्पन की उनतालीस कविताओं का गोरी शंकर नाम से हिंदी में अनुवाद करके डॉ. नायर जी ने प्रकाशित किया। उनकी अनुवाद कला से प्रभावित होकर डॉ. वेल्लायणि अर्जुन ने लिखा है कि "मनोयोगपूर्वक अध्ययन से प्रमाणित होता है कि यह कोई अनुवाद नहीं है बल्कि नई सृष्टि है।"[3] (पृ 119, डॉ. रेखा शर्मा केरल का स्वातन्त्रयोत्तर हिंदी साहित्य)

अनूदित साहित्य में 'अतीत के दिन' विशेष उल्लेखनीय है। केरल के विख्यात राजनीतिज्ञ, पत्रकार एवं साहित्यकार श्री. के.पी. केशव मेनन एक समर्थ वकील और सिलोन के हाईकमिश्नर रह चुके थे। 'अतीत के दिन' उनकी आत्मकथा है।

'ग्रन्थालोकम' मलयालम पत्रिका के हिन्दी पृष्ठ,

और 'सहकारी हिंदी प्रचारक' का सम्पादन उन्होंने किया था।

सम्पूर्ण केरल का हिंदी साहित्य समेटकर हिंदी जगत को केरलीय हिंदी साहित्य का परिचय कराने में योग्य ग्रंथ 'केरल के हिंदी साहित्य का बृहद् इतिहास' की रचना उन्होंने की है।

डॉ. नायर जी की दो सौ से अधिक रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपी थी। उनकी रचनाएँ विभिन्न ग्रन्थों में भी प्रकाशित हुए थे। अपने निन्यानबे की उम्र में 11 जनवरी 2022 को डॉ. नायर जी का स्वर्गवास हो गया था। लेकिन अपनी रचनाओं के माध्यम से आज भी नायर जी सब के हृदय में जीवित हैं और सदा स्मरणीय रहेंगे।

संक्षेप में पद्मश्री डॉ. नायर जी का व्यक्तित्व और कृतित्व भारतीय संस्कृति और उदात्त राष्ट्रीय चेतना से समन्वित है। भारतीय संस्कृति के महान आदर्श, अनेकता में एकता, त्याग आदि उनके साहित्य में अनुस्यूत है। उन्होंने पौराणिक पात्रों के साथ-साथ आम व्यक्ति के यथार्थ जीवन को भी अपने साहित्य का अंग बनाया है। इस प्रकार डॉ. नायर जी का साहित्य जहाँ एक ओर आदर्शों की स्थापना करता है वहीं आम आदमी से भी जोड़ने में सक्षम है।

सहायक ग्रन्थ :-

1. केरल का स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी साहित्य, डॉ. रेखा शर्मा, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली। प्रकाशन वर्ष - 2004
2. केरल के हिंदी साहित्य का बृहद् इतिहास, डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर, केरल हिंदी साहित्य अकादमी, त्रिवेन्द्रम। प्रकाशन वर्ष - 1989
3. केरलीय प्रेमचन्द: डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर, डॉ. नत्थन सिंह, उद्योग नगर प्रकाशन, गाजियाबाद। प्रकाशन वर्ष - 2000
4. डॉ. चन्द्रशेखरन नायर का नाटक साहित्य, डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर, महात्मा गाँधी कॉलेज, त्रिवेन्द्रम। प्रकाशन वर्ष - 1982
5. केरल में हिंदी भाषा और साहित्य का विकास, डॉ. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। प्रकाशन वर्ष - 1996

सहायक वेबसाइट :

https://keralahindisahityaacademy.com
http://drnchandrasekharannair.in

असिस्टेंट प्रोफेसर, एम.जी. कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम

डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर के काव्य में गाँधी दर्शन

प्रो.(डॉ.) पंडित बन्ने, डी. लिट्

डॉ. चन्द्रशेखरन नायर जी का मूल दृष्टिकोण राष्ट्रीय विचार धारा एवं गांधीवादी से ओत-प्रोत है। 'हिमालय गरज रहा है' में जो क्षोभ और आक्रोश है वह किसी राष्ट्रवादी के हृदय पर हुए आघात की ही अभिव्यक्ति है। वास्तव में 'हिमालय गरज रहा है' आक्रामक के प्रति भारत की आत्मा के आक्रोश का एक जीवंत स्मारक है। ...... यह हिमालय वंदन उसकी विराट राष्ट्रीय चेतना का स्मारक है। हिमालय के मुख से कवि ने भारत की उदार मानवतावादी परंपराओं का यशोगान किया है। इस देश में वीरों की कमी नहीं रही, पर यह देश किसी अन्य देश पर आक्रमण करने कभी नहीं गया। आक्रमण और अन्याय का प्रतिरोध करने में भी वह पीछे नहीं रहा जैसे-

"मुझे याद है भारत ही एक
जनपद, जिसने सर न झुकाया
डरकर अन्यायी के आगे
सत्य अहिंसा उसका नारा।"

(हिमालय गरज रहा है,- डॉ.नायर, पृ.८३)

देश पर चीन के आक्रमण पर हिमालय गरजकर उसे चुनौती देता है। इस देश में चंन्द्रगुप्त, भीष्म पितामह, राणा प्रताप, शिवाजी, वैलुतम्पी जैसे वीर तुम्हारे आक्रमण को विफल कर देने को प्रस्तुत हैं। वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, शंकराचार्य, तुलसी, कम्बर, रवींद्र के इस देश पर आक्रमण करने पर तुम्हें लज्जित होना चाहिए।

"पावन विश्व महाकवियों का
यह जन्मदेश है, युग जिनका
भक्तिभाव से प्रणमन करता
रुको, झुका दो अपना माथा।"

डॉ. नायर जी के साहित्य में मानवतावाद या विश्वबंधुत्व भावना हैं, अहिंसा और शांति मानवता के रक्षा कवच हैं कई बार परिस्थिति ऐसी विषम उपजाती है। जब संग्राम ही हमारा आवद धर्म बन जाता है। भारतीय वीर युद्ध का वरण तो करता है परंतु संहार के लिए नहीं अपितु मानवता की रक्षा के लिए वीरों में मानवतावाद की भावना है। यही दृष्टिकोण इनके काव्य चित्रण में हुआ है। कवि लिखते हैं-

"फिर भी सोचना है सौ बार
तभी को संग्राम विवश हो
रक्षित रहे मानवता, सहज
सत्वों का आधार सबल हो।"

(हिमालय गरज रहा है, - डॉ.नायर, पृ.९२-९३)

मानव को मानव के रूप में प्रतिष्ठित करना ही मानवता है। मानवता की जो धारा-महात्मा गांधी जी अजस्त्र धार डॉ.नायर जी के साहित्य में प्रवाहित है। कवि बार-बार अहिंसामूलक वैचारिकता का गायन करते हैं। कवि कहते हैं-

गाँधी जी ने प्राचीन संस्कृति के मानववादी सिद्धांतों को गहन कर मानव के विकास में उनका सदैव प्रयोग किया है। मानवता के सच्चे पुजारी मात्र गांधी रहे हैं। संपूर्ण विश्व की महान विभूतियों का स्मरण किया

और मानवतावादी विश्वबंधुत्व की भावना से ओत-प्रोत है। कवि कहते हैं-

"त्याग का, विश्व बंधुत्व का
यही नारा हमारा बुंलद रहे
सचमुच यहीं युग नारा रहे।"

(कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.नायर, पृ.५६)

आदर्शविहीन समाज के उन्मूलन की भावना कवि के मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रतीक है। मानवतावादी दृष्टिकोण मनुष्य का सबसे बडा आदर्श है। आज के सत्ता-लोलुप मानवीय चेतना पर प्रहार करते हैं। डॉ.नायर जी कहते हैं-

"विडंबना है, यह सत्ताधारी नीति
धिक है यह अभिशप्त मनःस्थिति
हाँ, धन संपति का सदुपयोग
आज भी सुअवसर है अनेक
रोकता है देश वर्ष का कालुष्य
भूखों मरना क्या धरती का नियम है?
देखते रह जाना है सज्जनता।"

(कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.नायर, पृ.५२)

डॉ. नायर जी परंपरागत भारतीय सांस्कृतिक आदर्शों में गहन आस्था रखते हैं तथा उनका विश्वास है कि हमारे सांस्कृतिक उच्चादर्श चिरपुराण होने पर भी चिरनवीन है। वर्तमान वैज्ञानिक युग में मनुष्य भौतिक समृद्धि है। आत्मिक शांति और मानसिक धैर्य के लिए प्राचीन मानवीय आदर्श ही उपयोगी है। बापू और नेहरू का अभिनंदन कवि बड़ी भावुकता से करता है-

"हम धन्य है, हमारी जननी
मातृभूमि धन्य है कि हमने
अपनी ही आँखों
मानव के ही रूप तुम्हें देखा है।"

कवि नायर की राष्ट्रीय भावना विश्व के सपूतों को श्रद्धांजलि समर्पित करती है और उनके गौरव से अपने को भी गौरवान्वित समझती है। उन्होंने वीर पुरुषों, महात्माओं का स्मरण किया है। कवि की दृष्टि में ये भारतीय किसान सुकृती हैं। ये कृषक माता के सच्चे सपूत हैं, वीर संरक्षक है तथा माँ को स्वयं समर्पित हैं। ये अमृत पुत्र हैं। कवि नायर की समत्व भावना यहाँ परिलक्षित होती है। उसकी राष्ट्रीय भावना मानवतावाद की सुदृढ़ भित्ति पर अवस्थित है। दानवराज बलि के त्याग, दानशीलता, बलि चाहे देव या दानव सदैव गुणी होना आवश्यक है। जन्म से दानव होते हुए भी गुण से देवत्व के अमरासन पर प्रतिष्ठित है। जैसे-

"किया प्रतिरोध घोर प्रकृति ने,
हुए विच्छिन्न सभ्यता के सपने,
डुबा दिया कोमलता को संसार ने
फटा दिल सज्जनता का,
आरंभ हुआ अराजकता का
लोप हुआ आस्तिकता का,
नृत्य चला विभीषिका का।"

डॉ. नायर जी की विश्वबंधुत्व भावना एवं मानवता वादी दृष्टि काव्य में ही नहीं अपितु उनके समग्र समन्वयवादी प्रवृत्ति की भारतीय सांस्कृतिक चेतना भारतीयता है। अहिंसा भावना का प्रसार और मानवीय आदर्शों की रक्षा भारतीयता के दो तत्त्व हैं। भौतिकवादी आज के मानव का गर्व है कि वह एक क्षण में संसार का संहार कर सकता है। कवि ने हिमालय के स्वर में जनमानस तक पहुँचता है। नायर जी कहते हैं-

"अब तो उसकी यही चुनौती
में दुनियाँ का नाश करूँगा
दुर्विनीता बंद कर मुँह से क्या-
दुनियाँ का? निजनाश करेगा।"

(हिमालय गरज रहा है - नायर, पृ.८०)

जनजीवन को सुरक्षित एवं सुखी बनाने की लालसा

भारतीयता का प्रतीक है। देवत्व की साधना पथ पर आसीन व्यक्ति की सराहना भारतीय आदर्शों का निर्वाह है। डॉ.नायर कहते हैं-

"विष पीकर सुकरात बन गये
अमर, क्रूश पर चढ़ ईसा भी
स्वार्थी बन उनको जिन्होंने
मारा, क्या पाया जीवन में?
स्वार्थवश अगर बुद्ध देव ने
त्यागा होता तब कुछ अपना
सम्राटों से भी क्या पूजित
बनते औ न पलायन मार्गी।"

(हिमालय गरज रहा है - डॉ.नायर, पृ.८२)

डॉ.नायर जी ढोंग, अनाचार, आडंबर, संहार और लोक के शोषण का विरोध करते हैं। वैदिक कालीन संस्कृति का दिव्य स्वरूप है इसी में भारतीयता निहित है।

"शुभे रत्न गर्भे
समस्त जग की
मंगल कामना में
सदैव आशा विश्वास किए
निर्व्दद्व-निर्वेर तुम विराजती हो
वसुधा को अपना परिवार मान।"

(कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.नायर, पृ.४५)

आज आगे की नई पीढी उसे अपने कुकर्मों से रौंद रही है और इसीसे हमारी चिर पुरातन संस्कृति का हनन हो रहा है। नायर जी देश की इस विषम परिस्थिति से पीड़ित है और वह मनुष्य को अपने साहित्य द्वारा शिक्षा देने को आशावादी है। अपने महान देश का भविष्य सुधारें। नई पीढ़ी को आशावादी एवं सही रास्ते दिखाने का काम डॉ.नायर जी करते थे। कवि कहते हैं-

"नव युवकों को सही मार्ग दिखाऊँ
कुत्सित फैशनस से उन्हें बचाऊँ
सत्य-अहिंसा के ताने बाने में
छात्रों का जीवन बुन डालूँ मैं
चलने लगे निष्ठा क्रम-क्रम
बहुआयाती भी उमंग भरी कार्यक्रम।"

(कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.नायर, पृ.७५)

कवि डॉ. नायर जी पर गांधीवाद का प्रभाव है। वे गांधीजी का गुणगान करते हैं। कवि शांतिदूत गांधी जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए लिखते हैं-

"सचमुच गांधी जी युग नायक
रहे थे स्वयं विश्व नागरिक
इस सच्चे सत्यान्वेषी का वसुधा ही
घर रहेगी सदा।"

(हिमालय गरज रहा है - डॉ. नायर, पृ.८४)

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि डॉ.नायर जी गांधीवादी साहित्यकार थे। उनके साहित्य में समाजहित, लोककल्याण की भावना, राष्ट्रीय चेतना एवं भारतीयता की धारा सदैव बहती रहती है। देशभक्ति एवं राष्ट्रीय भावना के कारण हिन्दी काव्य विकास के पथ पर एक अनमोल रत्न है। डॉ.नायर जी का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना और भारतीय संस्कृति है। देश प्रेम उनकी कविता का प्राण है।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, भारत महाविद्यालय,
जेऊर (म.रेल) तह-करमाला, जि.सोलापुर (महाराष्ट्र)

43वें केरल हिन्दी साहित्य अकादमी वार्षिक समारोह के वक्ता

“कहानीकार डॉ. एन चंद्रशेखरन नायर”

डॉ. राखी एस.आर.

पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर हिंदी के बहुचर्चित एवं प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। केरल में हिंदी लेखन परंपरा को उत्तर भारतीय हिंदी सृजन परंपरा के समानांतर लाने का स्तुत्य प्रयास करनेवाले साहित्यकारों में डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का नाम अग्रणी है। बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी लेखक हैं डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी। उनका जन्म दक्षिण भारत केरल राज्य के कोल्लम जिला में शास्तांमकोटा नामक गाँव में 29 दिसंबर 1923 को हुआ। माता श्रीमती जानकी और पिता नीलकंठ पिल्लै। प्रारंभिक शिक्षा शास्ताकोटा में ही संपन्न हुई। बी.ए.हिन्दी ट्रावनकोर विश्वविद्यालय 1956, साहित्य रत्न, इलाहाबाद हिंदी विश्वविद्यालय 1957, एम.ए.हिंदी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय 1958, पीएच.डी बिहार विश्वविद्यालय आदि की उपाधियाँ प्राप्त कीं। बाद में विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं में हिंदी अध्यापक के रूप में काम किया। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी चित्रकार भी थे। चित्रकला के प्रति स्वाभाविक प्रेम उनमें था।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी को केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, शिक्षा संस्थाओं और स्वैच्छिक संस्थाओं से अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए है। उनमें से प्रमुख हैं - प्रेमचंद लेखक पुरस्कार, साहित्य परिजात सम्मान, कर्मयोगी सम्मान, राजभाषा मनीषी, भारत एशियायी साहित्य अकादमी, सहस्त्राब्दी हिंदी पुरस्कार, राष्ट्र नायक सम्मान, हिंदी सेवा पुरस्कार आदि। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी साहित्यक व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्होंने काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आलोचना, जीवनी, अनुवाद, चित्रकार आदि साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में लेखनी चलायी है। सत्य, न्याय, अहिंसा, मानवप्रेम, उदारता आदि मानव के स्थायी गुणों के प्रति श्रद्धा तथा भक्ति उनकी रचनाओं में उपस्थित है। उनकी कहानियों के रंग अनेक हैं। कहानीकार जन-जीवन का सटीक चिंतक है। विभिन्न सामाजिक, आर्थिक समस्यायें डॉ.डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की कहानियों में हैं। ‘हार की जीत’, ‘प्रोफसर और रसोइया’ आदि डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जी के विशिष्ट कहानी संग्रह हैं।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का प्रथम कहानी संग्रह है ‘हार की जीत’ (1964)। इसमें संकलित प्रमुख कहानियाँ हैं - ‘हार की जीत’, ‘भवोति अम्मा; काठ के कफन’, ‘चमार की बेटी’, ‘अजंता का कलाकार’, ‘कान्ह गायब हो गया’, ‘बापु का संकेत’ आदि। अगला कहानी संग्रह है - ‘प्रोफसर और रसोइया’ (1974)। इसमें ‘प्रोफसर और रसोइया’, ‘यह खेल बेचारा नक्सल’, ‘अब कलियुग है’, ‘प्रेम बनाम प्रेम’, ‘आपका नारायणीयम’, ‘अब आप मकान बदलिये’, ‘मकान’ आदि प्रमुख हैं।

हार की जीत : हार की जीत कहानी में कर्नाल का राजा, रानी के संदिग्ध चरित्र से व्यथित है और दूसरी ओर स्वाधीन भारत में वर्तमान रिश्वतखोरी तथा भ्रष्टाचार से पीड़ित है। राजा की चिंता वैयक्तिक है और दूसरी ओर राष्ट्रीय है। दोनों में होनेवाला सामंजस्य भारतीयता का प्रतीक है। इस कहानी की

स्त्री पात्र मायादेवी भारतीय आदर्शों की प्रतिमूर्ति है। राजा अपनी पत्नी से बिना कुछ कहे उसे छोड़कर चला जाता है। राजा द्वारा की गई अग्निपरीक्षा में रानी सफल होकर अपनी प्रतिष्ठा को प्रमाणित करती है जो भारतीय नारी की पहचान है। प्रत्येक पुरुष की इच्छा होती है कि उसकी पत्नी पतिव्रता ही रहे जो कदाचित संस्कृति के अनुरूप ही है। रानी की प्रतिष्ठा उसकी हार को जीत में परिणित कर देती है। आदर्श नारी का आदर्श रूप मायादेवी के माध्यम से कहानीकार ने चित्रित किया है।

बाप का बेटा : यह कहानी प्रगतिशील विचारधारा से प्रेरित है। प्रस्तुत कहानी में रमेश नम्पीश और उनके पुत्र कमलेश का मानसिक द्वंद्व दिखाई देते हैं। पिता अपने पुत्र को शिक्षित करना चाहता है, लेकिन पुत्र, एक चित्रकार बनने का स्वप्न देखता है। पिता पुत्र को शिक्षित बनाकर समाज में प्रतिष्ठित करने को तत्पर है। कहानीकार ने प्रस्तुत कहानी में एक पिता का सच्चा स्वरूप प्रस्तुत किया है। कहानी के अंत में अपने पुत्र के हाथ का एक चित्र देखकर पिता का मानसिक द्वंद्व दूर हो जाता है।

भवोति अम्मे : डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की उत्कृष्ट कहानी है - भवोति अम्मा। भवोति अम्मा का चरित्र कठोर भी है और कोमल भी। अपने बच्चों को गाली देना और मारना पीटना उसका नित्य कर्म है। इस अकारण शोर से आस-पास का समाज भी व्यथित होता है। कथाकार की दृष्टि भवोति अम्मा के इस बाहरी रूप के आवरण को तोड़कर उसके अंतरंग तक पहुँचती है। भवोति अम्मा का यह विकृत रूप समाज की ही देन है। चार पितृहीन बच्चों की माँ निराशा और अभावों में खटकती रही, उसकी बाहरी विकृतियाँ उसके भग्न हृदय से उद्भुत हैं उसके क्रोध मार्ग का राही प्रत्येक वह सदस्य बन जाता है जो उसकी उपेक्षा करता है। वोट माँगने आये नेताओं को भी उसकी क्रोधाग्नि धमकाती है जिसमें शासकों का यथार्थ रूप सामने आता है - "आपको शरम नहीं आई तुम्हें मेरे दो बच्चे भूख से तड़प-तड़प कर मरे तब किसी कुत्ते को इस तरफ झांकते नहीं पाया।" कहानीकार ने इसके माध्यम से आज के लोकतंत्र पर प्रहार किया है। वह दोषी नहीं है, अपराधी वह समाज और शासन है जिसने मानव को भूख और तजन्य क्षोभ से मुक्त करने का कोई प्रयास नहीं किया है।

काठ के कफनः करुणा से मर्म को कचोटनेवाली कहानी है 'काठ के कफन'। अभावों और दुःख में पलता हुआ मात्तन अपनी पत्नी मौसी की मृत्यु को तो जैसे-तैसे झेल गया, पर जिस काठ के कफनों को बेचकर वह अपनी आजीविका उपार्जित करता था उसी में अपनी प्यारी बेटी मरियम को बंद करके ले जाते समय उसे मृत्यु की विभीषिका और अकेलापन का अहसास हुआ। रोज़गार केलिए व्यक्ति ऐसा कोई काम अपनाता है जो अति संवेदनशील होता है परंतु जब वही रोज़गार का साधन उसके परिवार के दफनाने या जलाने में सहायक बनता है। उसकी वेदना और कसक से समस्त कथा वेदनामयी हो जाती है।

चमार की बेटी : निर्धनता और जातिवाद के अभिशाप की कहानी है 'चमार की बेटी'। चमार के घर अंकुरित होनेवाली प्रतिभा के भाग्य में पल्लवित पुष्पित होना नहीं अपितु निर्धनता से पतित है। कांती का विवाह एक असुंदर अनमेल तथा अधिक आयु के व्यक्ति से तय होता है। कांती अपने पिता की मज़बूरी निर्धनता और अपनी भावुकतामयी चेतनशीलता के अंत में गंगा की पावन धारा में शरण ले लेती है। कहानी का अंत करुणामय है।

अजंता का कलाकारः तूलिका के स्पर्श से जीवंत सौंदर्य की सृष्टि कर देनेवाले बदसूरत कलाकार और सौंदर्य की अधिष्ठात्री राजलक्ष्मी के मानसिक

द्वंद्व की कहानी है। राजलक्ष्मी संपन्न परिवार की महिला है। वैवाहिक बन्धन में बंधने से पूर्व वह अजन्ता की कलात्मक कलाकृतियों के अवलोकनार्थ जाती है। वहाँ एक चबूतरेवाले वट वृक्ष के नीचे एक मानव छवि को देखकर वह किंचित भयग्रस्त हो जाती है। अपने विचारों से उन मानव कृति को विस्तृत कर सौंदर्य के कल्पना लोक में विचरने लगती है। उसकी सखी उसे बताती है कि काया मंदिर में उसकी मूर्ति बनी हुई है जो उसीका प्रतिरूप प्रतीत होता है। स्थूल सौंदर्य को महत्व देनेवाली राजलक्ष्मी ने कलाकार का रूप अपनी कल्पना में ढाला था। कलाकार की प्रेरणा विश्वभर जाती है। वह भावुकता से भ्रमित रह जाता है। कहानीकार ने कलाकार की संवेदना को मुखरित किया है। व्यक्ति जिस बाहरी रूप-सौंदर्य पर आकर्षित होता ै वह तो क्षणिक और क्षणभंगुर है, शाश्वत सौंदर्य तो मन का, विचारों का, व्यक्तित्व के विविध पहलुओं का और उत्कृष्ट कार्यों में निहित होता है।

कान्ह गायब हो गया : प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने धर्म के ठेकेदार की नकाब उतारी है। भगवान के नित्य सान्निध्य में रहनेवाला पुजारी आश्रम में प्रतिष्ठित भगवान के चित्र को सृजित करनेवाले चित्रकार को उसकी कला का पारिश्रमिक मात्र पच्चीस रूपये देता है। देवालय के अंदर चित्रकार की पुत्री से दुर्व्यवहार करने का प्रयास करता है। इन घटनाओं के साथ कृष्ण के गायब हो जाने की स्थिति डॉ.नायर जी ने कौतूहलमय स्थापित की है। कान्हा के गायब हो जाने पर धार्मिक कार्यक्रम चल रहे हैं ताकि आनेवाले अनिष्ट से बचा जा सके। यशोधरा के चित्र को हिलाकर कृष्ण के चित्र को पुनः प्रतिष्ठित करता है। कृष्ण पुनः माता की गोद में आसीन हो जाते हैं।

बापू का संकेत : रामलाल सुनार का हृदय परिवर्तन 'बापू का संकेत' नाम की सार्थकता का द्योतक है। रामलाल नामक एक सुनार कथानायक के बरामदे में बैठा उसकी बेटी की टूटी माल को जोड़ रहा है। परंतु वह बड़ी चतुराई से माल के तीन टुकड़े करके एक को झोली में रख लेता है, नायक उसके इस चोरकर्म को देख लेता है। नायक की दृष्टि बापू के चित्र पर पड़ती है जिससे प्रेरित हो वह सुनार को उसकी मेहनत के दो रुपये देकर विदा करता है। नायक का यह अहिंसात्मक आचरण स्वर्णकार को ग्लानी, प्रायश्चित और अपराध बोध की आग में पाँच साल तक जलाता है।

प्रोफेसर और रसोइया : इस कहानी में विषमता का चित्रण है। प्रोफेसर सम्पन्न व्यक्ति है पर उसके शरीर को अनेक रोगों ने घेर लिया है। उन्हें हमेशा डॉ.की सलाह के अनुसार चलना पड़ता है। उनका रसोइया रामु विपन्न है और सब कुछ लेने की सामर्थ्य होते हुए भी उसके पास पर्याप्त खाने केलिए अन्न नहीं है। रामू के शब्दों में "ओफ्फ दुनिया में कितनी अच्छी चीज़ें हैं पर उन अच्छी चीज़ों से आपका क्या वास्ता ..... हाँ बाबूजी आप तो ज़रा मुझे देखिए - जो भी चीज़ मिले खा लूँगा। साँप को भी खा जाऊँगा, अगर उल्टे वह हमें काटने न दौड़े। चार दिन कुछ न खाया तो कुछ न बिगडा। देखिये मैं सीर की तरह दौड़ सकता हूँ, ऊँचे-नीचे पेड़ पर चढ़ सकता हूँ। ...... हमें मांसाहार या फलाहार से क्या मतलब ? हमें तो बस जीना है, और जब मरना है तो मर जाना है।" (प्रोफेसर और रसोइयाँ, डॉ.चन्द्रशेखरन नायर, पृ.13) कहानीकार की संवेदना राम जैसे वर्गीय लोगों के प्रति स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होती है जो मानव को मानव रूप में ही स्वीकारती है।

यह खेल : कदमों की कोई जाति नहीं होती यह तो मात्र कदम से कदम मिलाकर चलते है। राजनैतिक स्वार्थ पूर्ति केलिए निकाले जानेवाले जुलूसों में किराये पर शामिल होना रामू जैसे लोगों का व्यवसाय है

परंतु यह व्यवसाय उसकी मरती हुई पत्नी और भूखे बच्चों केलिए कुछ व्यवस्था नहीं कर सका।

बेचारा नक्सल : जीवन की विषमता को अत्यंत मार्मिकता से उभारनेवाली कहानी है। शारीरिक कुरूपता के कारण नक्सल दिखाई देनेवाला व्यक्ति वस्तुतः गरीबी का मारा है। गरीबी के अभिशाप का करुण चित्र प्रस्तुत कहानी में है। इस कहानी के अंत में –"चिराग तले अंधेरा होता है और ऊपर से भद्दी दिखाई देनेवाली राख के भीतर मनुष्यता की आग सुलगाती रह सकती है। (दक्षिण के प्रतिनिधि साहित्यकार डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, भोपाल, भटनागर (पृ.203)

अब कलियुग है : कहानी में केरल की सस्यश्यामल धरती पर भगवान के अवतरण और धर्म, शिक्षा, राजनीति के क्षेत्र में पतन के दृश्य देखने की कथा है। एक दिन भगवान साधु का वेश धारण कर केरल की भूमि के अवलेकन केलिए अवतरित होते हैं, जहाँ मनुष्य की प्रगति देख वह प्रसन्न होती हैं। एक विद्यालय के आगे एकत्र जनसमूह देख भगवान वहाँ उत्सुकता से जाते हैं, जहाँ छात्रों को हडताल करके देखा और कारण जानकर भगवान उद्धार करने की भावना से प्रेरित होकर उन्हें समझाने का प्रयत्न करते हैं। आधुनिक छात्र भगवान की वेशभूषा देख उन्हें उपहास की वस्तु समझकर छेड़खानी करती है।

प्रेम बना प्रेम : इस कहानी में राघेष और मालती के प्रेम का भावुक चित्रण है। किंतु इस कहानी में दाम्पत्य प्रेम की सर्वोपरिता की प्रतिष्ठा की गई है। राघेष को मालिनी नामक एक भावुक लड़की का प्रेम पत्र मिलता है जिसमें वह निःसंकोच अपने प्रेम प्रस्तुत भी करती है। अपने आपको राघेष की प्रेमिका भी घोषित कर देती है। राघेष अपने परिवार को सर्वोपरि मानते हुए उस पत्र को नष्ट कर देता है। पत्नी और परिवार के प्रति एक निष्ठावान व्यक्ति बना रहता है। प्रस्तुत कहानी वैवाहिक बंधन को सर्वोपरि मानते हुए लेखक ने विवाह के पश्चात् के प्रेम की अनुचित बताया है।

आपका नारायणीयम : प्रस्तुत कहानी में एक वाचक के जीवन की करुण गाथा चित्रित है। नारायण नामक भिखारी का भीख माँगना पेशा नहीं क्योंकि प्रारंभ में नौकरी करता था। आर्थिक निर्धनता के कारण वह छूट गई। परिवार के पोषण केलिए वह भीख माँगने लगता है। प्रारंभ में उसकी पत्नी और पुत्री उसके साथ थे। एक स्टेशन मास्टर अपनी बूढ़ी माँ की सेवा केलिए उसे ले जाते हैं। अंततः वह स्टेशन मास्टर उसके दामाद बन जाते हैं। पत्नी भी पुत्री की देखभाल केलिए चली जाती है। परंतु दामाद को यह पसंद नहीं कि उसका ससुर भिखारी है। बेचारा नारायण, परिवार के होते हुए भी नितांत अकेला रहता है। इस कहानी में कहानीकार ने निर्धन व्यक्ति की करुण कहानी बतायी है।

अब आप मकान बदलिए : इस कहानी में एक प्रेतात्मा को पात्र के रूप में चित्रित किया है। कुछ वर्ष पहले एक लड़की ने अपने असफल प्रेम के कारण मृत्यु का वरण किया है। और वह मकान इसलिए कोई किराये पर नहीं लेता, क्योंकि इसमें प्रेतात्मा का निवास है।

मकान : इस कहानी में कर्मठ इंजीनियर मधुशील के प्रगतिशील विचार प्रस्तुत किये गये हैं। वह नित्य नवीन मकानों का निर्माण करता है, परंतु अपने लिए एक छोटा-सा मकान नहीं बनाता, अंत में अपनी पत्नी के साथ वन में मकान के अनुरूप साज-सज्जा कर रहने लगता है। यह निश्चित करता है कि जब तक देश में सभी को रहने की सुविधा नहीं हो जाती तब तक वह ऐसा ही रहेगा। अपनी पत्नी के समक्ष उसके कहे विचार कहानी को नई दिशा की ओर मोड़ते हैं- "सड़क पर जीवन के अनंत चित्र भरे पडे हैं। हम इस वैन में रहेंगे, जब तक इन विचारों को

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर की फुटकर कविताओं में गहन भावनात्मक अनुभव

डॉ. विजयलक्ष्मी. एल.

भारत की भावात्मक एकता को मज़बूत बनाने में हिंदी की उत्कृष्ट भूमिका रही है। हिंदी भाषा और साहित्य ने पूरी दुनिया में भारतीय संस्कृति की महानता को बिछाया है। अहिंदी भाषी क्षेत्र होने पर दक्षिण में हिंदी के विरुद्ध हुए सभी बाधाओं को पारकर आगे निकलने के लिए हिंदी को बहुत श्रम उठाना पड़ा। किसी भी भाषा की संस्कृतिक पहचान को अहित किए बिना हिंदी भाषा और साहित्य का सफर संपूर्ण भारतीय संस्कृति का गौरव बन चुका है।

"सम्पर्क साधने में जो मंगलसूत्र बनी,
भारत माँ के उन्नत ललाट की बिन्दी है।"[1]

साहित्य की विभिन्न विधाओं में कविता की एक खास पहचान है। क्योंकि वह मानव के अंतस्थल को छूनेवाली स्वाभाविक अनुभूति की अभिव्यक्ति है। समय की नफ़्ज़ पकड़नेवाली कविता मानव जीवन की व्याख्या करती है। कविता जीवन की आलोचना करके सशोधन का कार्य करता है-

"Poetry is at bottom a criticism of life"[2]

हिंदीतर प्रदेशों को हिंदी साहित्य की देन बहुत

घर न मिलेंगे हम भी दूसरा घर नहीं बनायेंगे। तब तक हम घूमते रहेंगे सडक पर। हमारा घर छोटा है पर तुम निश्चिंत रह सकती हो।" (प्रोफेसर और रसोइया - डॉ.चन्द्रशेखरन नायर, पृ.84)

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी के कथा साहित्य के पात्र अधिकांश आम वर्ग के ही लोग हैं। निर्धन, सर्वहारा, कुछ पौसों केलिए सभी दलों में नारे लगाने को विवश, अभावग्रस्त जनता, पेट भरने को बार-बार धंधे बदलनेवाले निरीह प्राणी ये ही उनके पात्र हैं। उनके कहानियों का मूल स्वर आदर्श और यथार्थ का समन्वय है। निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि उनकी कहानियाँ यथार्थ बोध से जुड़ी हैं। कहानियों के पात्र प्रायः संघर्रत हैं। गरीबी, बेकारी, नगरों की ओर पलायन, आवास और भूख की समस्या, रोग और जन-स्वाथ्य की उपेक्षा, अनुशासनहीनता आदि का चित्रण डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी के कहानियों में हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. बहुचर्चित कहानियाँ, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, श्रीनिकेतन प्रकाशन (2013), लक्ष्मी नगर, तिरुवनन्तपुरम-695004
2. प्रोफेसर और रसोइया, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर।
3. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के साहित्य में सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना, डॉ.पंडित बन्ने, क्लालिटी बुक्स पब्लिशेर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटेर्स, कानपुर 208016 (उ.प्र)
4. डॉ.नायर की साहित्य रचनाएँ, डॉ.एन. चन्त्रशेखरन नायर, श्रीनिकेतन प्रकाशन, तिरुवनन्तपुरम-695004
5. केरल के हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.पी.लता, 2016, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-211001

हिन्दी अद्यापिका, अय्यनकाली मेम्मोरियल आर्ट्स & सयन्स कॉलेज, पुनलूर, कोल्लम

बढ़िया है। स्वातंत्र्योत्तर काल में केरल में एक समृद्ध परंपरा कविता के क्षेत्र में रही हैं। आधुनिक हिंदी साहित्य के अग्रणी कवियों में प्रख्यात हैं डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर। उन्होंने कविता, कहानी, नाटक, निबंध, चित्रकारिता, अनुवाद, जीवनी, उपन्यास आदि विधाओं में लेखनी चलाकर हिंदी साहित्य-भण्डार को समृद्ध बनाया हैं। विराट व्यक्तित्व के धनी चन्द्रशेखरन नायर जी बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार के साथ-साथ समर्पित समाजसेवी भी हैं। वे संस्कृति को राष्ट्र का स्पंदन मानते हैं। उनके समग्र साहित्य में संस्कृति की अमिट छाप दृष्टिगोचर है। उनकी कविताएँ सांस्कृतिक संवेदना की तीखी मिसाल हैं।

वे युगपुरुष हैं, भारत की विविधता में एकता के दर्शन करानेवाले कर्मयोगी हैं। अफ़्ब्दुल अज़ीज़ अर्चल के शफ़्ब्दों में-

"कल्पना के पंख लेकर उड़ चला हिंदी गगन पर,
सात्विक अंतर, मनोहर शफ़्ब्द रत्नों को सजाकर,
गुनगुनाता गीत गाता, कालजय के स्वर लुटाता।"[3]

नायर जी का काव्य संसार खंडकाव्य, महाकाव्य और फुटकर कविताओं की अमूल्य संपदा है। मौलिक व अनूदित कविताओं से उन्होंने हिंदी काव्य साहित्य को गौरवान्वित किया है। लगभग पचास फुटकर कविताएँ अपने रंग और ढंग से निकाली हैं। आधुनिक हिंदी काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियों की झलक उनकी फुटकर कविता की विशेषता है। इनमें छायावाद की कोमलता, प्रगतिशील चेतना, प्रयोगवादी शैली का अनुसरण दिखाई देते हैं- "यह कवि कल्पना की अलकापुरी में विचरता तो है, पर अपनी मातृभूमि के तत्कालीन राष्ट्रीय परिवर्तनों और सामाजिक घटनाओं से अलग नहीं रहती।"[4]

नायर जी की फुटकर कविताओं के भी मूल स्वर में सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और लोकमंगल का समावेश है। 'प्रहरी', 'माँ के सपूत' जैसी कविताओं में राष्ट्र की रक्षा के लिए परिश्रमी प्रहरियों की प्रशंसा किया गया है। 'पुरुष पुराण', जवाहरलाल नेहरु को विश्वपुरुष के गरिमामय आसन पर अधिष्ठित करके समर्पित कविता है-

"तुम लयलीन हुए जग के मनुज मनुज में,
नवस्फूर्ति का शान्ति का मधुरतम स्पन्दन बन,
मानव के उन्मेष-निमेषों में समा गये थे।"[5]

काव्य-वैविद्यय के प्रसंग में उनकी 'सप्तवर्णी' शीर्षक कविता श्रेष्ठ उल्लेखनीय है। उनकी सात छोटी-छोटी कविताओं के वर्णों से भरा इन्द्रधनुष है 'सप्तवर्णी'। नवीन शैली में प्रस्तुत यह कविता एक प्रकार की भावावेग का परिचय देती है। 'सप्तवर्णी'के कुछ वर्ण इसप्रकार हैं-

वर्ण-1

साध रे मन साध रे!
जो न आता हाथ रे
जो न जाता हाथ से
साध रे मन, साध रे!!

वर्ण-2

पूज्य अपने को किया
शून्य अपने में किया![6]

यह कविता जीवन के गंभीर सूत्रों को दार्शनिक स्तर पर भावगत सौष्ठव एवं सघनता से प्रकट करती है।

नायर जी परंपरागत भारतीय सांस्कृतिक आदर्शों को चिर नवीन मानते हैं। आज के वैज्ञानिक युग में मानव के भौतिक संसाधनों के पीछे भागने की होड़ ने उनके आत्मिक विकास की गति में बाधा डाली। चिरंतन मानवीय आदर्शों को आत्मसात् करने की आवश्यकता पर उनकी कविताएँ ज़ोर देती हैं-

"हम धन्य है, कि हमने अपनी ही आँखों
मानव के ही रूप तुम्हें देखा है।"[7]

नायर जी की कविताएँ विश्वमानवतावाद की ओर अग्रसर हैं। इस विश्व कल्पना को चिरस्थायी बनाये रखने के लिए माँ को कवि द्वारा समर्पित कविता है- 'चिरयौवना'

"मुझे रहना है यौवना
चिरयौवना, इसलिए कि
तू प्रकृति की दिव्य कल्पना!" [8]

चिरंजीवियों के व्यक्तित्व की सूक्ष्म रेखाओं को कवि ने शफ़्द्बबद्ध किया है। अश्वत्थामा के प्रखर विनाशक व्यक्तित्व, दानराज बलि के सत्यनिष्ठ एवं त्यागमय व्यक्तित्व आदि का रोमांचकारी चित्रण उनकी कविताओं में हुआ है।-

कभी सुना? कभी देखा ?
नाटक कपटता का ऐसा बड़ों का!
पर क्या! हुआ छोटा
अनंत अप्रमेय अखण्ड।[9]

इन कविताओं के साथ साथ 'बीसवीं सदी का मानुष', 'आज वह मालिक है', 'तुम आ गये फिर अप्रवासी', 'मत करना परिक्षण', 'शकुन्तला! हाय शकुन्तला', 'अकिचन का नमन' आदि कविताओं में उन्होंने अपने युग की असंगतियों को पैनी लेखनी से चित्रित किया है। उत्साह, उल्लास और उद्‌बोधन का काव्यमय स्वर उनकी कविताओं के सौंदर्य को चार चाँद लगाता है।

'गुरु चरणों में' शीर्षक से लिखी गद्य कविता गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर से संबंधित है। उनके साहित्य के दिव्य संदेश को कवि ने गद्य कविता के रूप में प्रस्तुत किया है-

"अतुल्य सौन्दर्य द्रष्टा! आप जीवन के संदेशवाहक हैं। भूमि पर स्वर्ग विभूति के स्रष्टा भी आप हैं।"[10]

गद्य कविता की गरिमा को पूर्ण रूप से आत्मसात् करनेवाली ये पंक्तियाँ गुरुदेव के प्रति नायर जी की विनम्र भावनाओं का समर्पण हैं। आधुनिक काव्य कला की उत्कृष्टता का उत्तम परिचायक है उनकी गद्य कविता।

डॉ.चन्द्रशेखरन नायर ने अपने जीवन में समाज तथा साहित्य के लिए इतना श्रम उठाया कि वह लफ़्ज़ों के आगे है। युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति और इतिहास से परिचय कराने में उनकी कविताएँ सक्षम हैं। लोकजीवन एवं मानव महत्व के स्वर उनकी कविताओं में गूँज उठते हैं। साहित्यिक क्षेत्र में नायर जी का योगदान, हिंदी के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा का जीवंत उदाहरण है। हिंदी भाषा और साहित्य को अपनी लेखनी द्वारा उँचे पद पर विराजित किए उनका उद्यम स्तुत्य है।

संदर्भ सूची :

1. केरल का स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य-पृ.सं-1
2. केरल का स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य-पृ.सं-154
3. केरल का स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य-पृ.सं- 94
4. दक्षिण के प्रतिनिधि हिंदी साहित्यकार डॉ.चनद्रशेखरन नायर-पृ.सं-212, 213
5. कविताएँ देशभक्ति की-पृ.सं-24
6. कविताएँ देशभक्ति की-पृ.सं-29
7. कविताएँ देशभक्ति की-पृ.सं-25
8. कविताएँ देशभक्ति की-पृ.सं-23
9. केरल का स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य-पृ.सं-159, 160

संदर्भ ग्रन्थ :

1. प्रो.एन. चन्द्रशेखरन नायर जीवन और साहित्य -डॉ. सुशील कुमार कोटनाला-तक्षशिला प्रकाशन प्रथम संस्करण 2016
2. कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर - केरल हिंदी साहित्य अकादमी प्रथम संस्करण-1994
3. केरल का स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य (डॉ.एन. चद्रशेखरन नायर के विशिष्ट संदर्भ में) - डॉ. रेखा शर्मा-अभिषेक प्रकाशन प्रथम संस्करण-2004
4. दक्षिण के प्रतिनिधि हिंदी साहित्यकार डॉ. चनद्रशेखरन नायर- डॉ.गोपालजी भटनागर- केरल हिंदी साहित्य अकादमी प्रथम संस्करण-1991
5. एक कर्मयोगी की आत्मकथा भारत-स्वतंत्रता के रास्ते से - डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर- केरल हिंदी साहित्य अकादमी प्रथम संस्करण-2011

अध्यापिका, सेंट्रल हाईस्कूल, अट्टकुलंङरा, तिरुवनंतपुरम

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी वार्षिक समारोह 28-12-2023

डॉ. के.वी. रंजिता राणी

ब्रह्मलीन पद्मश्री डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर के 101वें जन्मदिन समारोह के सिलसिले में केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का 43 वाँ वार्षिक सम्मेलन व डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर गवेषणा पुरस्कार समर्पण संयुक्त रूप में 28 दिसंबर 2023, गुरुवार सुबह 10.00 बजे केरल हिन्दी प्रचार सभा वषुतक्काड के एम.के.वेयालुधन नायर प्रेक्षागृह में आयोजित हुए। डॉ. एस.तंकमणि अम्मा ने अध्यक्ष पद अलंकृत किया। माननीय विदेश कार्य संसदीय कार्य सहमंत्री व दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष श्री. वी.मुरलीधरन उद्घाटक बने। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की अध्यक्षा एवं महासचिव के नेतृत्व में सभा सदस्य व गुरुवर के परिवारजन के अनुरक्षण में मुख्य अतिथि सभागृह में प्रवेश कर मंच पर विराजमान हुए। गणमान्य विद्वज्जनों के मंच पर पधारते ही श्रीमती रमणी बाई के सुलिल कंठ से निस्मृत प्रार्थना गीत से सभागार मुखरित हुआ। तत्पश्चात महासचिव डॉ. सुनंदा एस. ने मंच व सभागार में उपस्थिति सभी का शॉल ओढ़ाकर हार्दिक स्वागत किया।

अकादमी के संरक्षक पूर्व न्यायाधीश उच्च न्यायालय केरल, पूर्व ऑबुड्समैन, अध्यक्ष केरल सरकार अगाडी समुदाय कल्याण कम्मिशन जस्टिस श्री. हरिहरन नायर ने मंत्री महोदय को शॉल ओढ़ाया, दिवंगत गुरुवर के पोते योगेश चंद्र ने मुख्य वक्ता, सुपुत्री नीरजा राजेन्द्रन ने अध्यक्षा य संरक्षक को शॉल बहनाए। महासचिव के अनुसार गुरुवर हिन्दीतर क्षेत्र में हिन्दी प्रचार-प्रसार को अपना धर्म और गांधी जी के प्रति अपनी भक्ति मानते थे। इस उदात्त विचार के परिणामस्वरूप अकादमी महान ऊंचाईयों तक 43 सालों में पहुंच सकी। मुख्य अतिथि व अन्य विद्वज्जनों ने समेकित रूप से भद्र दीप को प्रज्वलित किया। लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ.एस.तंकमणि अम्मा ने अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी के सर्वांगीण प्रचार-प्रसार में तल्लीन अकादमी के वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा की ओर प्रयाण में सब के सहयोग का आह्वान किया। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष के रूप में गौरवान्वित महसूस करते हुए उद्घाटक ने हिन्दी को भारतीय संस्कृति की सवाहिका करार देते हुए इस बात पर खेद जताया कि विदेशों में जैसे, जापान के ओसाका यूनिवेर्सिटी व यूरोप में भी हिन्दी पढ़ने-पढ़ाने वाले भारतीय मूल के नहीं रहे फिर भी, भारत के सभी राज्यों में हिन्दी को राजभाषा के रूप में पूर्ण स्वीकृति देने में आज भी आपत्ति जताई जाती है। तत्पश्चात हिन्दी साहित्य अकादमी की विवरणिका का प्रकाशन कर्म संपन्न हुआ।

मंत्रीवर ने ब्रोशर मुख्य वक्ता श्री. वी.पी.जॉय को प्रदान किया। पुरस्कार विजेता डॉ. दिलना के. के शोध प्रबंध की घोषणा करने के लिए कालडी श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग अध्यक्षा प्रो (डॉ.) के श्रीलता विष्णु ने पुरस्कार निर्णायक समिति सदस्यों का परिचय दिया जिसमें डॉ.पी.जे. शिवकुमार, डॉ. लीलाकुमारी अम्मा, डॉ.के.पी.उषाकुमारी शामिल थे। गुरुवर की मंशा के मुताबिक एक उत्तम शोधार्थी को उनके उत्तम शोध प्रबंध के लिए निर्धारित धनराशि ₹ 50,000 का नकद

पुरस्कार एवं स्तुति फलक प्रदान करना इनका ध्येय रहा जिसकी कामयाबी पर सब खुश थे। वक्ता श्री.वी.पी.जॉय ने गुरुवर की क्रांतदर्शी दीर्घदर्शी विचारधारा की सराहना करने हुए कहा कि केरलीय जनता अपनी सहिष्णुता और विशाल मन के लिए स्तुति के पात्र हैं जो किसी भी भाषा को उसकी तन्मयता के साथ स्वीकार कर लेते हैं और अनुवाद कार्य में पूरी तरह तत्पर रहते हैं।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के सचिव डॉ. विष्णु आर.एस.ने वार्षिक रिपोर्ट की प्रस्तुति की। संरक्षक ने अपने विशिष्ट वक्तव्य में कहा कि कृत्रिम बुद्धि ने अनुवाद के क्षेत्र में तहलका मचा दिया है और महासचिव एवं गुरुवर के परिवारजन को संस्तुति देते हुए कहा कि वे गुरुवर की महत्वाकांक्षा उनके कार्य को आगे बढाने में तन-मन-धन से जुड़े हुए हैं, बिना किसी ट्रस्ट के। जाने माने लेखक, चिंतक, कवि, साहित्यकार संग्रथन पत्रिकाके संस्थापक संपादक डॉ.वी.वी.विश्वम ने कहा कि यशस्वी गुरुवर स्वयं एक इतिहास है, उनके जीवन का वृत्तचित्र अपने संवेदनशील शब्दों से खींचते हुए बताया कि गुरुवर खादी, हिन्दी और सर्वोदय के वक्ता रहे, भारतीय संस्कृति के वक्ता रहे, अहिंसा के प्रचारक और सनातन धर्म के स्तुति पाठक रहे, उन्होंने चट्टम्पी स्वामी, श्रीनारायण गुरु, अय्यंकाली जैसे समाज सुधार के पुरोधाओं के जीवन चरित्र लेखन से आगामी पीढ़ी के पथ को आलोक प्रदान किया है।

गांधी स्मारक निधि के अध्यक्ष डॉ. एस.राधाकृष्णन ने शास्तांकोटा चंद्रशेखरन नायर के व्यक्तित्व का परिचय प्रदान किया जिनको साहित्य साधकों के हुनर की गहरी पहचान थी और जो सच्चे साहित्य का मुक्तकंठ प्रशंसा करने से कभी चूकते नहीं थे। केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री अधिवक्ता मधु ने कहा कि संजोग की बात है गुस्वर के पद्मश्री पुरस्कार वितरण समारोह व उनके 101 वें जन्मदिन समारोह के लिये प्रचार सभा मंज़र बनी। गुरुवर की प्रिय पुत्री नीरजा राजेंद्रन ने पिता से प्राप्त प्रत्येक मानवीय गुण का गिन का गिन कर बखान किया। यह बताया के कैसे स्वयं कर्मनिरत रहकर वे सबके लिए मिसाल और प्रेरणा बनते थे। केरल हिन्दी प्रचार सभा पी.जी. विभाग के प्राचार्य डॉ. पी.जे.शिवकुमार ने बताया कि उत्तर भारतीय द्वारा साहित्यानुसंधान के लिए चुना जाने वाला पहला विषय ब्रह्मलीन डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर की रचनाएं थीं।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की पूर्व सचिव श्रीमती. राजपुष्पम पीटर ने अपने सुरीले कंठ से गुरुवर की महानता का बखान किया, उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। एस.एन.कॉलेज के हिन्दी विभाग की पूर्व अध्यक्षा डॉ.लीला कुमारी अम्मा ने कहा कि बुद्धि और हृदय के समंजन से अनुभूत सत्यों को युगानुरूप अभिव्यक्त करने वाले सच्चे साहित्यकार होते हैं और उन्होंने गुरुवर को परंपरावादी, मानवतावादी, अहिंसावादी, सहिष्णुतापरक दृष्टि, वसुदैव कुटुंबकम की भावना, वैज्ञानिक युग की विडंबना प्रतिपादित करने वाले अमर ज्योति इतिहास का नाम देकर गुरुवर का स्मरण किया। कार्यकारिणी सदस्या के.पी. उषाकुमारी ने जागरूक संगाठक होने का इल्म जताया, कहा कि वे कर्म से महान बने। तत्पश्चात, पुरस्कार विजेता डॉ. दिलना के ने अपना जवाबी भाषण दिया। अंत में, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ. पी.लता जी ने सभी को कृतज्ञता ज्ञापित की और प्रीतिभोज के साथ समारोह की समाप्ति हुई। समारोह का भव्य एवं सुंदर संचालन डॉ. रंजिता राणी के.वी. ने किया।

अध्यापिका, सरकारी उच्च माध्यमिक स्कूल, अट्टेंगानम, कासरगोड

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी कार्यक्रम

पद्मश्री डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त पुरस्कार

दिवंगत पद्मश्री डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर 101वाँ जन्मदिन समारोह

डॉ. एन.राधाकृष्णन

प्रो. वी.वी. विश्वम

अधिवक्ता मधु बी.

श्रीमती एस. नीरजा

डॉ. पी.जे. शिवकुमार

प्रो. (डॉ.) एस. लीलाकुमारी अम्मा

श्रीमती राजपुष्पम पीटर

प्रो. (डॉ.) के.पी. उषाकुमारी

डॉ. दिलना के.

प्रो. (डॉ.) पी. लता

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के 43वें वार्षिक समारोह में श्री. वी. मुरलीधरन उद्घाटन भाषण देते हुए।

श्री. वी. मुरलीधरन केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के ब्रोशर का प्रकाशन करते हुए।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के 43वें वार्षिक समारोह में डॉ. वी.पी.जॉय आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त) मुख्य भाषण देते हुए।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी डी-१, लक्ष्मी नगर, पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर रोड, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४
के लिए शोध-पत्रिका डॉ. एस.सुनन्दा, महासचिव द्वारा प्रकाशित और डॉण ओफसेट प्रिंटेर्स, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००१ में मुद्रित।